वाणी

अनुक्रमणिका

लक्ष्य

उड़ान 3
उसका सच मेरा सच 12
कन्नू की गाय ते मम्मी की cow.....22
शेर हो दहाड़ दो 26
वक़्त 40
कहाँ, कैसी, क्यों 39
बेशकीमती है ज़िन्दगी 39

इश्क़

कश्मकश 4
रैंडम रोमैंस 13
टूटे दिल की हसीन दास्ताँ 28
तेरा नाम 29
विरह – वेदना 34

अश्क

हज़ारों ख्वाइशें ऐसी.....17
दुर्योधन के आँसू 24
वो भूली दास्ताँ 25
इज़हार 29
शब के चिराग 31
हमारे साहब 32
प्यास 36

मौज

बिट्सियन प्यार 6
रजनी चालीसा 11
साम-दाम-दंड-भेद 18
खूनी लाल 27
फेसबुक-ट्विटर: आभासी दुनिया ...30
व्यापार बढ़ रहा है 35

उम्मीद

"ख़ुश रखेगा" "ख़ुश रखूँगा" 9
कठिनाइयों की डगर पे 21
मंज़िल रुकी है 24
सूरज हुआ मद्धम 33
ज्योति 37
सफ़र की चाह में 40
बंजारी तमन्नाएँ 43

सरस

घर की ओर 16
माँ 23
बाबूजी 23
अधूरा रक्षाबंधन 42
मैं आनंद ढूँढता रहा 44n

देखिये तो लगता है ज़िन्दगी की राहों में एक भीड़ चलती है |
सोचिये तो लगता है भीड़ में हैं सब तन्हा ||

ये पंक्तियाँ शायद हर किसी के जीवन से जुड़ी हैं | घर से दूर, अनजाने लोगों के बीच, जब हम सभी ने बिट्स में पहली बार कदम रखा था तब भीड़ का हिस्सा होते हुए भी हम तन्हा थे | पर शायद ज़िन्दगी में दोस्त ही होते हैं जो इस अकेलेपन को भरते हैं | दोस्तों के साथ खेलते हुए, मस्ती के रंगों में भीगते हुए यह एहसास होने लगा कि कितनी भिन्न है यहाँ की दुनिया उस बाहरी दुनिया से | संसार की तमाम उलझनों से दूर इस कैम्पस के छात्र अपने ही रंग में रंगे होते हैं | बिट्स में हँसते, खेलते, पढ़ते हुए बिताये पिछले 3 सालों में अनजाने ही हमें अपने मित्रों की आदत सी हो गयी | पर हमें उनसे कितना स्नेह है यह हमने शायद ही कभी व्यक्त किया हो | अभिव्यक्ति के इन्ही अनूठे रंगों को लाये हैं हम आप तक "वाणी" के माध्यम से |

वाणी है अभिव्यक्ति आनंद की, प्रेम की, उन्मुक्त मौज की | वाणी है अभिव्यक्ति अपनेपन की, अधूरी इच्छाओं की, असीम आकांक्षाओं की | मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगा उन समस्त लोगों का जिन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष इस पत्रिका में बहुमूल्य योगदान दिया है और आशा करता हूँ कि वाणी पढ़ते समय आप भावनाओं की इस अनूठी यात्रा का पूर्ण आनंद लेंगे |

संपादक
रोहन महाजन

उड़ान

- लोकेश राज

रास्तों में है अँधेरा घना
या फिर खुद की ही हैं आँखें बंद ?
राह है लंबी अंतहीन
या खुद की ही है चाल मंद ?

क्यों न जान पाता कभी ये मन
क्यों होती ये दुविधा ये उलझन ?
जो पाता देख स्वयं के पार
तो जान पाता, क्या है यह
बंधन, या खुद का ही विकार ?

आसमान से बरसी धुंध
या नयनों की ही है ज्योति भंग ?
है भीड़ बहुत इन राहों में
या खुद का ही ह्रदय है तंग?

कैसी अजब ये प्रश्नों की भूलभुलैया है
राह में है ठोकर कभी कभी अँधेरा विकराल है |
उलझनों का जाल बुनते ये अंतहीन सवाल हैं
कौन दिखाए राह, न जाने कौन खिवैया है ?
ऐसी अजब यह प्रश्नों की भूलभुलैया है !

है राह काँटों भरी पथरीली
या नाज़ुक हैं अपनी ही एड़ियाँ ?
हैं सफर में मुश्किलें अनेक
या खुद ही बाँधी हैं ये बेड़ियाँ ?

जो है अभीष्ट, जो है कामना
जाऊं उस पथ पर करूँ कैसे सामना ?
उस धुंध का, उस अन्धकार का
पथरीली राहों से एडियों में पड़ती दरार का
पर
असंभव है रुकना, चलना है अविराम
देरी है बस कुछ पल की..
फिर होगी मेरी उड़ान....

कश्मकश

- अपूर्वा भंडारी

आज सुबह डाकिया डाक दे गया था | अर्जुन ने उसका नाम देख, बिना कुछ भी पूछे उसे पत्र थमा दिया | पर वह क्यों मन ही मन कांप उठी थी ? क्या जानती नहीं थी कि अर्जुन के पास न तो समय है न ही कोई उत्सुकता यह जानने की कि दो माह से उसके मन में कैसा द्वंद्व चल रहा है ? उसकी मनोव्यथा कब से उसी तक सीमित थी | ऑफिस जाकर उसने पत्र खोला |

तन्वी,

जब दो रात पहले तुमने फ़ोन पर कहा, कि तुम खुद ही अपने मनोभावों को नहीं समझ पा रही हो, तो मैं कुछ कह नहीं पाया तुमसे | इसे मेरी कमजोरी ही समझ लो पर शायद इस कलम के माध्यम से मैं अपने आप को बेहतर व्यक्त कर पाऊँ |

तन्वी, पिछले तीन वर्षों से तुम मेरे जीवन का एक हिस्सा रही हो | पहले ऑफिस में एक जूनियर के रूप में, फिर एक मित्र, और अब, सब कुछ | जब तुमसे मिला था, तब शुरू में ही पहचान गया था, कि बाहर से बेपरवाह-सी दिखती इस चुलबुली लड़की के अंतर्मन का एक ऐसा कोना है, जिसमें कुछ रंग, कुछ सपने छुपे हैं | एक अलग ही संसार है उसका | धीरे धीरे उन्ही रंगों में डूबता उतरता चला गया और अंततः जाना कि उनमें एक बन जाने कि ख्वाहिश सी मन में जाग उठी थी |

पर क्या यह मुमकिन था ? दो माह तक तर्क वितर्क में उलझा रहा | मन को समझाता रहा कि तुम किसी और को समर्पित हो | मैं, केवल एक मित्र हूँ तुम्हारे लिए, और कितना कुछ |

पर फिर मन ने पूछा- क्या मित्रता प्रेम का ही एक रूप नहीं ? और प्रेम की परिणीति एक सुखद अंत ही हो, ऐसा जरूरी तो नहीं ?

फैसला कर लिया, कुछ भी बदलने की जरूरत नहीं है | नहीं चाहता था कि मेरी भावनाओं से तुम्हारे विश्वास को कोई ठेस पहुंचे या हमारे रिश्ते पर कोई आंच आए |

पर फिर ऑफिस के जर्मनी प्रवास में अपने सारे तर्क भूल कर रह गया | तुम्हारे करीब न होने के बावजूद तुमसे इस कदर जुडता चला गया कि अपने मन में उमड़ते तूफ़ान को रोक नहीं पाया | मन ने कहा, मुझे सच बताने का हक़ है, और तुम्हें, जानने का | बस, शब्दों में दर्द बहता चला गया |

हालाँकि बार बार तुमसे कहा था, कि मेरी कोई अपेक्षाएं नहीं है | तुम्हारे शब्दों में मैं अब अभी तुम्हारा फ्रेंड फ़िलोसोफर गाईड ही हूँ और सदा रहूँगा | किन्तु एक सच छुपा गया था तुमसे | जानता हूँ कि कोई उम्मीद रखने का हक़ नहीं मुझे, पर तुम्हें एक साथी के रूप में पाने की ख्वाहिश सदा रही है | जब जब तुम उदास हुई हो, तुम्हें बाहों में भर दिलासा देने को मन बौराता रहा है |

तन्वी, जब उस रात तुमने पूछा कि तुम्हारी यह कश्मकश क्षणिक भावुकता है, या तुम्हारे अवहेलित मन का अर्जुन के लिए प्रतिकार, तब न जाने क्यों मुझे लगा कि तुम अपने आप से भाग रही हो | अपनी भावनाओं को मूर्खता का नाम देकर उनमें निहित सत्य को नकारना चाहती हो तुम | पर क्यों? क्यों डरती हो अपने भीतर की उस लड़की से जो सपने देखती है, और उनमे नए रंग भरना चाहती है ?

मैं तुम्हारे जीवन में दुविधा का कारण नहीं बनना चाहता | तुम्हें मित्र के रूप में पाकर खुश हूँ | पर यह जरूर चाहता हूँ, कि तुम अपने आप से ईमानदार रहो | अपने दिल का कहा मानो तन्वी, और किसी डर को अपने आप पर हावी मत होने दो |

-धैर्य

पत्र पर टप टप आँसू गिर रहे थे | मन का कहा मानना है, पर मन का कहा समझ आए तब न |

पिछले आठ माह से अर्जुन के साथ लिव-इन पार्टनर की तरह रह रही है | अर्जुन को शादी जैसी बातों में विश्वास नहीं है न, इसलिए | उससे पहले भी तो वे दोनों एक वर्ष से साथ हैं | अर्जुन के लीक से हटकर विचारों से वह सदा प्रभावित रही है | पर कुछ बातों से वह सहमत नहीं हो पाती | बहुत बार कुछ खलता है पर कुछ कह नहीं पाती |

यह धैर्य समझते हैं | इतने समय से उसके हर डर, उसकी हर दुविधा को धैर्य समझते आये हैं |

उनके जर्मनी प्रवास के दौरान कई बार उसने खुद को अकेला पाया है. पर कभी कुछ ऐसा एहसास नहीं हुआ | धैर्य की ओर से उसे कभी कुछ अटपटा सा नहीं लगा | लेकिन दो माह पहले धैर्य के साथ उस फ़ोन कॉल ने बहुत कुछ बदल दिया था | मन में तब से अनेक प्रश्न उठ रह थे. पर इस पत्र ने उन सभी का उत्तर दे दिया |

अब फैसला उसे करना है |

कैसे ?

घर पहुंची तो याद आया, अर्जुन आज दोस्तों के साथ बाहर रहेगा | फिर से पत्र खोला और पढने लगी | जितनी बार पढ़ती, मन का द्वंद्व बढ़ता चला जाता | कुछ समझ नहीं पा रही थी | अंततः धैर्य को फ़ोन मिलाया | दो दिन पहले ही वह वापस आए थे फ़ोन पर कुछ बोल नहीं पाई | धैर्य शायद कुछ कुछ समझ गए थे | कुछ ही देर में दरवाजे पर खड़े थे | उसे देखते ही हँस पड़े "तुम्हें पता है न तुम बंद बालों में बच्ची लगती हो ? "

आँखों में आँसू फिर भर आए | बाल खुलकर लहरा गए |

"अब ठीक है ?"

धैर्य कुछ पल उसे देखते रह गए | फिर आगे बढ़ उसे बाहों में ले लिया, और वह उनमें टूटती चली गयी | जान गयी, प्रेम की यही परिणीति है |

बिट्सियन प्यार

- प्रकाश सिंह

मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |
तू जो ऑडी की है क्लॉकटावर
तो मैं घड़ी हूँ आर्ट & डी वाली |
तू शिवगंगा का फव्वारा है,
मैं बगल में बहती हुई नाली |
तू बारिश की बरसती टिप टिप बूँद,
मैं हूँ गरम लू अप्रैल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू नन्ही, शांत गिलहरी है,
मैं खुजलाता, मुँह मारता श्वान |
तू टी लॉंस की हरी हरी घांस,
मैं बाहर खड़ा हूँ कूड़ादान |
तेरे प्यार में मेरे अकैड्स हैं बिगड़े,
सी जी कार्ड कर दे मुझे पेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू ओएसिस में फैशपी, मैमो जीती,
मैं किसी प्रीलिम्स में नहीं सेलेक्टेड हूँ |
तू एपोजी में बनी ब्रेन ऑफ़ बिट्स,
मैं प्रोजेक्ट आईडिया रिजेक्टेड हूँ |
तू हर इवेंट में आगे रहती है,
मेरी किस्मत भी दे कभी ढकेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू कोस्टन है कंट्रोल्ज़ की ,
मैं किसी क्लब का भी को.ऑर्ड नहीं |
तू रोज़ कनौट पे डिनर करती ,
मैं मेस एक्सट्रास कर सकता अफ्फोर्ड नहीं |

तू रेडी के गुलाब जामुन सी लाल & स्वीट ,
मैं हूँ तीखा सैम वाला भेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू लम्बी चौड़ी एम.वी. है,
तो मैं उसके बाहर खड़ा एक चौकी हूँ |
तू बोसम में बास्केटबाल का खेल,
तो मैं बोसम का हॉकी हूँ |
तेरा प्यार कभी हमको मिल जाए जैसे ,
अक्षय की 15% डिस्काउंट वाली सेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू बिट्स की जान डी.सी.++,
मैं स्लो स्पीड वाला लैन हूँ |
तू सी.एस. का चहिता खेल है,
मैं सरला रेस्तरां बैन हूँ |
तू फेसबुक की मोस्ट लाइक्ड वीडिओ,
मेरा कोई नहीं थम्बनेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू लाइब्रेरी का बिटसैट सेंटर,
मैं बंद पड़ी वहाँ की लिफ्ट |
तू पढ़ती, हर एक्जाम फोड़ती,
मैं घोटने वालों का नाईट शिफ्ट |
मेरे प्यार की वैल्यू घट रही है जैसे,
पिलानी में विंटर टेम्प-स्केल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू वि.के.बी. मेस का ग्रब है,
तो मैं के.जी. मेस का थाल हूँ |
तू एम.सी.एन पाने वाले की ख़ुशी,
तो मैं ऐ.सी.बी. वाले का हाल हूँ |
रैफ के वाई.पी.डी. की तरह हमारी,
लव स्टोरी का न हैड न टेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू स्काई की छोटी सी कुटिया है ,
मैं तुझे ताकता म्युसियम का गेट |
तू भरा ग्लास चोकलेट चोफो का,
मैं स्काई लौंस पे पड़ा एक खाली प्लेट |
हमारी एन्क के पनीर अफ्घानी जैसी मुहब्बत,
जिसमे मसाला कम, ज़्यादा है तेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू वर्कशॉप की सी.एन.सी. रूम,
मैं हूँ घिसने वाला फिटिंग का जॉब |
अपना प्यार तूने ले लिया लाईट ,
हमारा मिलन मुझे लगता था ऑब |
मेरे किसी मेसेज का तू न दे रिप्लाई,
जैसे मैं हूँ कोई रूट मेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

मैं पी.सी.ऐ. का मुंडा हूँ,
तो तू भी पी.सी.ऐ. की कुड़ी है |
मैं गर्मियों वाला एल.जी.एम.एफ़ ,
तू नाचते मोर की पंखुडी है |
तेरा प्यार है वो बिटसैट ,
जिसमें होता रहा हूँ मैं फेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

तू हैल्थ क्लब की एक्टिव मेम्बर,
मैं मैड सी की मेहरबानी हूँ |
तू साढ़े तीन सौ एकड़ विशाल बिट्स की धरती,
मैं बचा हुआ शहर पिलानी हूँ |
चाहता तो था तुझे भगा ले जाऊँ ,
पर यहाँ हवाई अड्डा तो दूर, पिलानी में नहीं रेल प्रिये |
मुश्किल है अपना मेल प्रिये,
ये बिट्सियन प्यार नहीं खेल प्रिये |

रजनी चालीसा

- प्रतीक माहेश्वरी

आज कल रजनीकांत पर बहुत सारे एस.एम.एस और दो लाईना बन रहे हैं| भैया अब वो हैं ही ऐसे कमाल के| ६१ साल में ऐसे-ऐसे कारनामे अपनी फिल्मों में जो करते हैं| नव-कलाकारों की तो सिट्टीयां और पिट्टीयां सब गुम हो गए हैं| पर जनाब इनके ऊपर बन रहे एस.एम्.एसों ने तो धमाल ही मचा रखा है| तो मैंने भी सोचा कि चंद पंक्तियाँ लिखूं इस महान कलाकार पर: (आप सब से गुजारिश है कि इसे अच्छी मंशा में ही लें| मैं किसी के खिलाफ कुछ नहीं लिख रहा हूँ) तो रजनीजी के ऊपर प्रस्तुत है.....

चाहे मुन्नी कितनी भी बदनाम हो
चाहे शीला की जवानी पूरी चढ़ी परवान हो
चाहे ए.सी.पी प्रद्युमन ऊसपर बन रहे एसेमेसों से परेशान हो
पर पूरी दुनिया फिर भी कहेगी..
ओह माय रजनी तुस्सी महान हो!
पूरे भारत की शान हो!
आइन्स्टीन के लिए बेईमान हो!
न्यूटन के लिए हैवान हो! आश्चर्यों की खान हो!
दुनिया की श्रृष्टि-गान हो!
मुर्दों में दौड़ती जान हो!
बेसुरों की टोली की तान हो!
इंजीनियरिंग कॉलेज के मेस की नान हो!
सुनामी के सामने ऊफान हो!
मूक के लिए ज़बान हो!
बहरे के लिए कान हो!
सूरज को सप्लाय करने वाले भान हो!
पानी में तैरता वायुयान हो!
कुम्भ में वीरान हो!
गिनीज़ बुक के लिए हैरान हो!
साइकिल के लिए कटने वाली चलान हो!
दुनिया की सबसे समतल ढलान हो!
खली के लिए पहलवानी की दुकान हो!
रिकी पॉन्टिंग को लगे, ऊससे भी बड़े बेईमान हो!
ब्रैड पिट से भी ज्यादा जवान हो!
पर जो भी हो... कम्प्लीटली मेड इन हिंदुस्तान हो!
और हम सब के लिए धरती वाले भगवान हो!
ओह माय रजनी.. तुस्सी ग्रेट हो! महान हो!

ख़ुश रखेगा" "ख़ुश रखूँगा"

- सहर्ष चोरड़िया

कुनकुनी धूप और सौंधी खुशबू के बीच अलसाती सुबह में राजू की गुमटी पर आकाशवाणी पर रफ़ी साहब के सदाबहार नगमे बज रहे थे | मियां क़ुतुब रोज़ की तरह मैला सा कमीज़ पहने चरमराते तख़त पर बैठे चाय की चुस्कियों का मजा ले रहे थे |

बेटे को जब से विलायत भेजा है, समझो सेवानिवृत्त हो गए हैं | मजाल है कि गर्दन एक पल को भी नीचे हो ले ! सीने में तो मानो किसी ने हवा भर के रख दी थी | चाय को बश्शी में डाला, और तबीयत से सुर्राते हुए बोले "बहुत फिक्र करता है वो हमारी ख़ुशी की ! वहाँ से तो फ़ोन करने के भी पूरे 10 रुपये लगते हैं, पर अल्लाह ताला गवाह है जो एक दिन भी बिना बात किये सोया हो वो | 2 साल तो बस यूँ गुज़रते हैं | फिर यहीं आएगा वो | इतना बड़ा हो गया था पर अभी भी अम्मीजान के बगैर निवाला हलक से नीचे नहीं उतरता था | बचपन में,

जहाँ ज़रा सी बारिश हुई नहीं कि कुरता खेंचने लगता था और कहता 'चलो अब्बू, नाले में कागज़ की नाव तैराते हैं | आज तो मेरी ही नाव ज्यादा दूर तक जाएगी | अल्लाह कसम |' और समझ तो इतनी थी कि क्या बखान करें | अरे राजू एक बार मैंने उसको दो सौ रुपये की कमीज़ दिला दी थी | 2 महीने तक तो उसने अलमारी से नहीं निकाली, कहता था ख़राब हो जाएगी |" गीली पलकों को पोंछते हुए मियां ने आगे कहा,

" इतनी मासूमियत से कहता था 'ये बस्ती कितनी अच्छी है न अब्बू, ये राजू भाईजान की दुकान पर सब कितना हँसते हैं, ये पीपल की चौपाल पे कैसे गोवर्धन चाचा इतनी सारी कहानियाँ सुनाते हैं, और यहाँ सड़क पे खेलने में मेरे दोस्तों को भी बहुत मजा आता है अब्बू |'

परवरदिगार ने इतनी रहमत की है हम पर | बहुत खुश रखेगा हमें सलीम |"

राजू भी सहमति में सर हिला दिया करता था | कभी कभी एक दो जुमले भी कस देता था- "हीरा है", "आशीर्वाद है ठाकुर जी का उस लड़के पे", "पूरे मोहल्ले का लाल है वो |" और मियां की छाती और चौड़ी हो जाया करती |

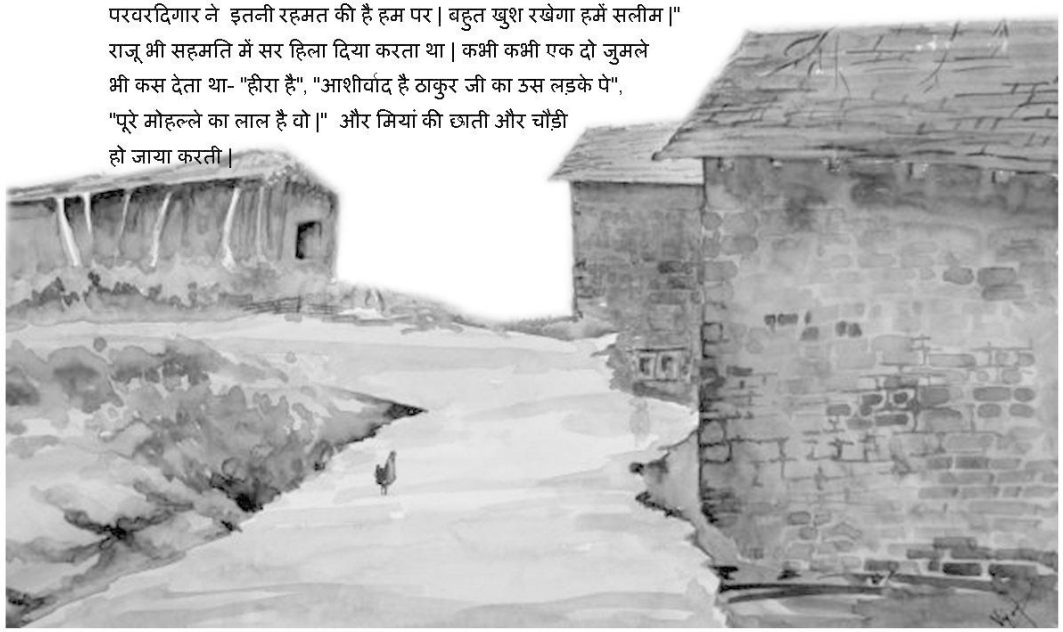

हलकी पीली रोशनी से सजे

और रूम फ्रेशनर से महकते एसी मॉल में मद्धम आवाज़ में बज रहे ओपेरा संगीत को सुनते हुए सलीम बरिस्ता कॉफ़ी के गद्देदार सोफों पर शेखर के साथ बैठा था | अक्सर दोनों साथ चंद किताबें लिए यहाँ आ जाया करते थे | जब से सलीम विलायत आया है, पढ़ने के सिवा और कुछ काम ही नहीं है | मजाल है गर्दन एक पल को किताब से ऊपर हो ले ! एकाएक पाठन रोक

कर आयरिश कॉफ़ी का एक घूँट लेते हुए सलीम बोला "यार शेखर, अम्मी अब्बू ने बहुत ख़राब समय देखा है | अल्लाह ताला ने हर तरह से उनका इम्तिहान लिया है | पर अब और नहीं |

बहुत देखे वो दिन शेखर, ज़रा सी बारिश से, यु नो, सारी नालियाँ भर जाती थीं | इतना गन्दा सीवेज सिस्टम | और ऊपर से अब्बू की सेलेरी भी इतनी कम थी, पूरा जीवन उन्होंने कोम्प्रोमाईस में ही निकाला है |" गीली पलकों को पोंछते हुए सलीम ने आगे कहा, "बस ये डिग्री पूरी हो जाये, वैसे ही उन दोनों को यहीं बुलाऊंगा | चैन से गुज़ारा होगा | हर चीज़ यहाँ एक ही मॉल में मिल जाती है | वहाँ कैसे अब्बू को एक एक सामान के लिए अलग अलग दुकानों के चक्कर काटने पड़ते थे, फिर भी क्वालिटी का भरोसा नहीं | और फिर शाम को क्लब में जाया करेंगे तो थोड़ी गपशप भी हो जाया करेगी | बहुत ग़म झेले हैं अम्मी अब्बू ने मेरे लिए ! अब फ़र्ज़ निभाने की बारी मेरी है | बहुत खुश रखूँगा अम्मी अब्बू को मैं !" शेखर भी सहमती में सर हिला दिया करता था | और कभी कभी एक दो जुमले भी...

रैंडम रोमैंस - आम बिट्सियन की ख़ास लव स्टोरी

- निरुपम आनंद

13 फरवरी, कमरा नंबर 112:

तरंग अपने रोशनदान के ऊपर छिपकलियों को देख रहा था | दो छिपकलियाँ आपस में खेल रही थी | तरंग अपने वॉलपेपर को रिफ्रेश कर रहा था | तृतीय वर्ष में कॉलेज की संकायों की स्मृति चित्रों (बैच स्नैप्स) के दौरान छात्रों को सहपाठियों के साथ फोटो लेने का मौका मिलता था | सभी लड़के इस दिन अवश्य नहाते, लड़कियां खुद को संवारती और शायद जीवन में पहली बार साड़ियाँ पहनती | तरंग ने भी इस दिन सभी दोस्तों के साथ तस्वीरें अपनी कैमरे में कैद की थी, पर ये वॉलपेपर इस दिन की सबसे अच्छी भेंट थी | आखिर तरंग के बहुत ही प्रिय मित्र शिवम् ने इस कैमरे से खास उसके लिए ये तस्वीर अनन्या के साथ ली थी |

अनन्या ... और बस तरंग उस वॉलपेपर को देखने लगा, अनन्या ने सफ़ेद साड़ी पहनी थी, शायद ही कुछ मेक-अप किया हो, बस हल्का सा काजल, और हलकी सी मुस्कराहट और एक अविस्मरनीय स्मृति | तरंग ने आर्ट& डी में रहते समय फोटो शॉप सीखी थी, बहुत काम आई, सिर्फ अनन्या की आँखों के चारो ओर उसने एक ग्लो डाल दिया था | ये वॉलपेपर शायद खुद अनन्या से भे ज़्यादा खुबसूरत था और यही कारण था कि तरंग अभी भी सोच रहा था, कल 14 फरवरी है !....

अनन्या से पहले वर्ष में तो तरंग मिला भी नहीं था | दोनों की एक ही डुअल डिग्री थी | दूसरे वर्ष में कॉलेज के तकनीकी उत्सव में अनन्या और तरंग एक ही संकाय के होने के कारण रूबरू हुए थे | तरंग पढने में काफी अव्वल था, मूवी देखते-देखते परीक्षा की एक रात पहले किताबों को सफाचट कर जाया करता था | अनन्या काफी स्मार्ट थी, लेकिन पढने में ध्यान नहीं देती थी | पर तरंग अनन्या पर कभी चांस नहीं मार पाया, कारण राजीव, तरंग और अनन्या का सहपाठी |

राजीव और अनन्या एक दूसरे के साथ घंटो घूमते, अनन्या के साईकिल के पिछली सीट पर राजीव बैठते और दोनों कैम्पस के किसी कोने में घंटों बातें किया करते | तरंग मन ही मन सोचता, आखिर क्यूँ अनन्या, कमबख्त तुमसे साईकिल चलवाता है खुद पिछली सीट पर बैठा मजे से घूमता है, और यहाँ मेरी साईकिल की पिछली सीट तुम्हारा इंतज़ार कर रही है.... | पर छोटे से शहर, दादरी से आये हुए तरंग कभी हिम्मत नहीं कर पाए की अनन्या के साथ कुछ समय बिताने का बहाना ढूंढे | देखते ही देखते अनन्या और राजीव की पटरी बैठ गयी और तरंग बस अनन्या की आँखों में वो मुस्कराहट देख कर खुद को संतुष्ट करते रहे |

पर कालेज के तीसरे साल में जब अनन्या ने कहा, "तरंग कैन वी हैव अ पिक टुगेदर" तो तरंग का दिल थम गया .....शिवम् ने मौके को भांपते हुए तुरंत अपने सोनी डिजिटल से तरंग और अनन्या की तस्वीर उतार ली | शिवम् ने उस फोटो को देने के लिए एक मैगी खिलाने का सौदा फटाफट कर लिया | एक के नाम पर दो फ्राइड-मैगी और कोल्ड ड्रिंक गटकने के बाद आखिर शिवम् ने ये पिक तरंग को दी थी | साला शिवम् ! तरंग सोचता हुआ उन छिपकलियों की ओर वापस देखने लगा | कैसे तीसरे साल में जब अनन्या और तरंग एक क्लास के बाहर निकल रहे थे, तब गीता जो तरंग की दोस्त थी और अनन्या की भी, उसने कहा- तरंग शिकंजी पीने चलें ?
तरंग ने कहा पिछले दो हफ़्तों से नाश्ता मेस में नहीं कर पाया, पर इसका मतलब अब गीता तुम्हारे साथ शिकंजी ही पीनी पड़ेगी है | अरे शिकंजी के साथ समोसे भी हैं आज मेनू में, गीता बोलकर अपना बैग संभालने लगी | गीता तरंग की बड़ी अच्छी दोस्त थी, आर्ट & डी में दोनों का साथ में चयन हुआ था |

पेंटिंग और कला की शौक़ीन गीता ने अपने शौक के लिए आर्ट & डी (जो कि कला और अलंकरण में रूचि रखने वाले छात्रों का संघ था) में सदस्यता ली थी, तरंग ने सोचा बचपन में टीचर पेंटिंग देखकर खुश होती थीं, और कुछ तो आता नहीं, यही कर लें | फिर साथ में पेंटिंग करते वक्त और आर्ट & डी के सदस्यों के साथ होने वाली मौज मस्ती में गीता और तरंग काफी अच्छे दोस्त बन गए थे | साथ में इंट्रो ली गयी थी, गीता को तरंग को प्रपोज करने को कहा गया था | तरंग ने सोचा मुझे क्या प्रपोज करेगी, शायद आर्ट & डी छोड़कर चली जाए | गीता ने तरंग के चारो और घूमते हुए एक गाने का अंतरा गाया था, ..."इसीलिए मम्मी ने मेरी तुम्हे चाय पे बुलाया है" और तरंग हँस पड़ा |

हाँ गीता चलो, तरंग ने कदम बढ़ाये ही थे कि गीता ने कहा, अनन्या, तरंग इज आल्सो कमिंग | कदम रुके, एक तरंग दौड़ गयी तरंग के मन में, वो सोच रहा था ...तरंग, अनन्या इज आल्सो कमिंग शायद बेहतर होता .... | सबने शिकंजी और समोसे लिए, और गीता बैठ गयी तरंग की टांग खीचने | बात ताजमहल की होने लगी, गीता ने कहा देख अनन्या, इस बार तरंग ताजमहल की पेंटिंग बना रहा है | तरंग ने कुछ सोचा या शायद कुछ नहीं सोचा,... शायद बस बोलने के लिए अपनी जबान खोली और शब्द निकलते गए | ताज इज बियुटी, और चाँदनी रात में .... अनन्या तुम मेरे साथ ताज देखने चलोगी, एक चाँदनी रात में ?
अनन्या हंस पड़ी , गीता ने तरंग की ओर देखा और आँखों से इशारे किये | तरंग के मन की बात बाहर आ गयी थी, वो मन ही मन प्रसन्न था | बात आगे नहीं बढ़ी, एक लड़की की मुस्कान कितने ही चीज़ों का जवाब दे देती है, उस हंसी का मतलब साफ था, अनन्या कभी नहीं जाने वाली थी तरंग के साथ, चांदनी रात में, ताज ..... पर उस 'ना' से भी कितना खुश था तरंग | वापस लौटकर उसने ऋषि को ये बात सुनाई, दोनों ने बाकी दोस्तों को ये वाकया सुनाया, सभी हंस पड़े |

चौथे साल में तरंग को मालूम हो चला था कि राजीव और अनन्या की कहानी में उसका काम नहीं | राजीव विदेश जा चुके थे आगे की पढाई करने, और तरंग ने वार्षिक सालसा उत्सव के लिए अनन्या से पूछने की हिम्मत जुटायी | एक क्लास के बाहर निकलते ही उसने अनन्या से पूछा: हाई.... , सालसा के लिए मेरे साथ चलोगी अनन्या ?, तरंग ने सोचा ताज कमबख्त दूर है, उस बार हंस पड़ी थी, इस बार हाँ कर दे तो जीवन सफल, हंस दे तो भी.... हाय ... | "सालसा मेरे बस की नहीं" ओह, ये क्या, कुछ समाधान करना होगा...., तरंग ने तुरंत कहा, तो मेरे बस की कौन सी है, सीख लेंगे .... "नहीं" पर, तरंग भांप गया | कोई बात नहीं, ऋषि सालसा कर रहा है, बड़ा अच्छा डांसर है, उसे देखने चलेंगे | हाँ, गीता भी ... दोनों ने हामी भरी और चल दिए |

आज 13 तारीख थी, 13 फरवरी,
तरंग से अपने दोस्तों से बोला, अनन्या को कल रेड ग़ोज दूँ ? सबने कहा, क्यों भई, क्या फायदा ? राजीव तो पहले ही तेरे दीये बुझा चूका है .... | तरंग ने छिपकलियों से नजर हटाई और स्क्रीन पर नजर डाली, वो आँखें अभी भी मुस्कुरा रहीं थी | 14 फरवरी को तरंग क्लास से निकला ही था कि उसकी नजर उन आँखों पर पड़ी | उसने निश्चय कर लिया, उसे ताजमहल याद आया, वो हंसी याद आई, तरंग को मालूम था कि अपने कालेज के आस पास लाल गुलाब ढूँढना मुश्किल है, नकली प्लास्टिक का गुलाब तो कॉलेज के स्टोर में मिल रहा था, ऋषि कल ही लाया था गीता के लिए !

सोचता हुआ तरंग कॉलेज के लेक्चर काम्प्लेक्स से बाहर निकला, लाल गुलाब की कलियाँ तो सामने थीं | लेक्चर काम्प्लेक्स के ठीक सामने लाइब्रेरी की फुलवारी में गहरे लाल रंग की गुलाब की कलियाँ २००७ के वसंत-समीर में अपनी खुशबू बिखेर रही थीं | एक पुराने पीले रंग के डंडे के साथ वहीं चौकीदार बैठा था, एक कली को देखते हुए तरंग ने कदम बढ़ाये, उसे तोड़ा, और चौकीदार के देखते ही देखते साईकिल पर बैठ निकल पड़ा | असामयिक आई इस फुर्ती के सामने पीला डंडा उठ भी नहीं पाया था | ...अनन्या अभी दुसरे क्लासरूम पहुँच ही रही होगी | बिना लॉक लगाये तरंग ने साईकिल फेंकी, क्लास के बाहर कारीडोर में अनन्या अकेली थी |

हाई, "अनन्या, ये तुम्हारे लिए" | वो खूबसूरत कली सामने थी, तरंग के हाथों में, उसे नहीं मालूम था क्या बोलना है, कैसे देना है, वो बस उस हंसी का इंतज़ार कर रहा था, फिर चाहे अनन्या हंसकर यही कह दे की मैं नहीं ले सकती तरंग ..... | "इज दिस अ रियल ग़ोज ?" अनन्या ने तरंग के हाथों से उस कली को थामते हुए पूछा | आँ... हाँ ....., कहाँ से मिली ? अनन्या ने उस कली की खुशबू लेते हुए पूछा | तभी कालेज का बज्ज़र बज पड़ा और कारीडोर में छात्रों की आवाजें आने लगीं |

थैंक यू, कहकर वो क्लास के अन्दर चली गयी | तरंग वही खड़ा रहा, जानता था, राजीव और अनन्या की कहानी में उसका कोई काम नहीं, पर अनन्या का थैंक यू उसके मन में गुलाब की कलियों के भांति अपनी छटाएं बिखेर रहा था | तरंग ने क्लासरूम में झाँका .. अनन्या अन्दर बैठी थी, उसके हाथ में गुलाब की वो कली थी, शायद वो मुस्कुरा रही थी | तरंग आनंदित था....

उसका सच – मेरा सच

डा. देविका सांगवान,

भाषा विभाग, बिट्स पिलानी

जब उसने कहा तुम वाहियात हो, बेकद्रे हो, घमन्डी हो
मेरे आश्चर्य को मेरे धैर्य ने संभाला।
उसके शब्द फिर शून्यता के हवाले हो गए।
मेरा वजूद मेरे पुरखों की श्रम और शर्म का खून पसीना है,
नाकामयाबियों और अभावों की मेरी जिंदगी में अनुपस्थिति तकदीर का जकाजा नहीं,
मेरे दादा परदादा की नैयमत है
जो शायद सूरज के साथ उगे और फिर चाँद और तारों के साथ रात भर चले
मेरे ऐश्वर्य की परवरिश, ज्ञान का भंडार लक्ष्मी और सरस्वती का उपकार है
जिन्हे मेरे जन्मदाताओं ने परिश्रम, श्रद्धा और सादगी में सींचा।
फर्क है तुम में और मुझ में
तुम्हे अपने वजूद के अतीत की शर्मिन्दगी है
मुझे अपनी धरोहर पर गर्व है, घमंड है, दंभ
तुम मुझे जो चाहे कहो, जो समझो, और अपने को कहीं भी खड़ा पाओ
ये तुम्हारा सच है।
मैं क्यों तुम्हे दोष दू, मेरा जीवन मेरा सच है।
मुझ से न रश्क कर
खुद से इश्क कर
मेरी ताकतों से न सिर टकरा
खुद की नींव बुलन्द कर
ताकि तेरे अग्रज
खुद पर गर्व कर सकें
और सिर उठाकर कह सकें
ये मेरा सच है।

घर की ओर

- सहर्ष चोरड़िया

दूर क्षितिज पर लाल व्योम में शांत होती रवि-ज्वाला
वर्चस्व स्थापित करता मद्धम श्वेत सोम अधूरा
और पास खड़ा तम से, सम से लड़ता एक अकेला तारा
कहीं छप्पर के अंदर टिमटिमाती पीली बत्ती
बाहर छुटपुट बिखरी झाड़ियों से पटा बंजर मैदान अनंत
और साए-से खड़े जड़-श्याम कंटीले पेड़ चंद
चौंधियाती रोशनी से सड़क धोती हुई बढ़ती-घर्रती मेरी गाड़ी
साथ चलता धूल का गुबार – गंधमुक्त, स्वाद-हीन
और पीछे छूटता त्रुटिहीन अंधकार का समुद्र अंतहीन
तेजी से पीछे निकल चुका रंगीन रौशन ढाबा
सामने खड़े लदे हुए ट्रक, गर्म, भयावह, शांत
और बच जाती प्रसन्नचित्त करती भीनी लुभावनी सुगंध-नितांत
परन्तु इससे कहीं ज्यादा प्रसन्न-संतुष्ट है आज मेरा चितवन
मेरी मंजिल हैं दो आँखें जो चमक उठेंगी अपने चिराग की एक झलक से
मेरी मंजिल है एक बेसब्र गोद, भरपूर है जो मुझे समा लेने की ललक से
उस आँचल के भीतर है एक देवी
उन आँखों के भीतर है आधार मेरा
मेरी मंजिल है मेरा घर, मेरी मंजिल है गाँव मेरा...

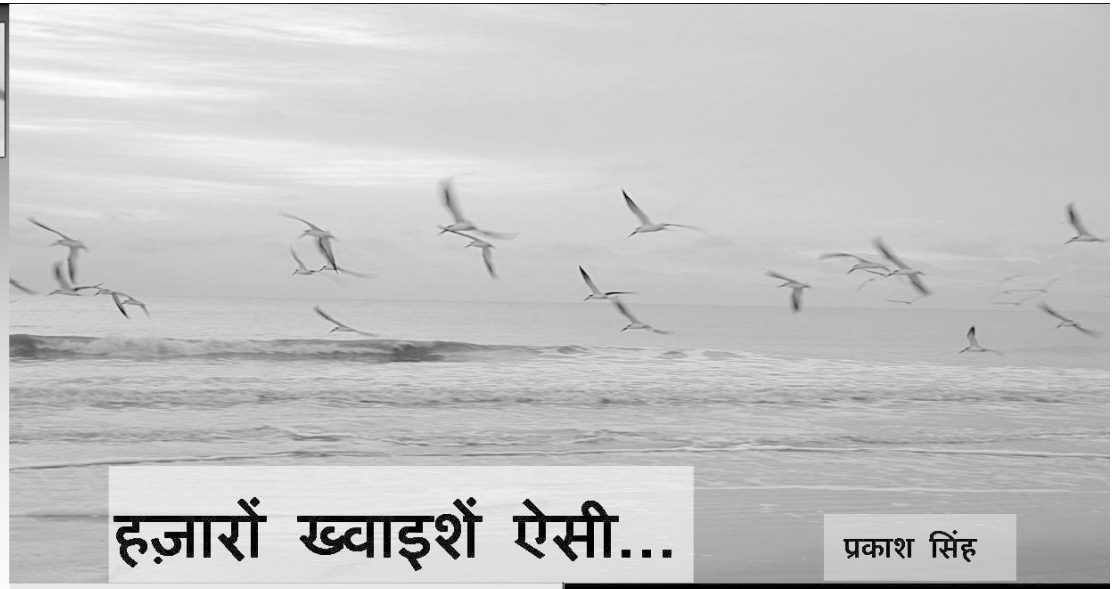

हज़ारों ख्वाइशें ऐसी...

प्रकाश सिंह

ख्वाइश थी हम भी बाग़ में चला करते,
फूलों को छेड़ा करते, काँटों पर हँसा करते,
तितलियों से खेला करते, झूलों पर झूला करते,
पर हमें ये मौसम कभी इतना सुहाना न मिला |

प्यार की दरिया में डूबना हम भी चाहते थे,
कुछ हसीं पलों को समेटना हम भी चाहते थे,
किसी की यादों को दिल में संजोना हम भी चाहते थे,
कमबख्त हमें प्यार का कोई बहाना न मिला |

कभी एक कवि बनने की हसरत थी,
कुछ सुरों में गीत भरने की हसरत थी,
लफ़्ज़ों से दिल छूने की हसरत थी,
धुन तो थी मगर हमें कोई तराना न मिला |

चाहते थे हम भी कुछ कर दिखाएँ,
जूनून और जोश में इस क़द्र डूब जाएँ,
कुछ उम्मीद दे, कुछ कर गुज़र जाएँ,
पर अकेले थे साथ देने को ये ज़माना न मिला |

किसी की यारी में मर मिटने की चाहत,
यारी में दीवाना हो जाने की चाहत,
यारी पे जान कुर्बान करने की चाहत,
पर हमें कोई शख्स इतना दीवाना न मिला |

कुछ लफ़्ज़ों को यूँ पिरोने की तमन्ना,
कुछ ऐसा शेर लिखने की तमन्ना,
कूट-कूट कर जिसमे ज़िन्दगी भरने की तमन्ना,
पर हमें कोई शेर इतना कातिलाना न मिला |

साम-दाम दंड-भेद

- प्रांशु

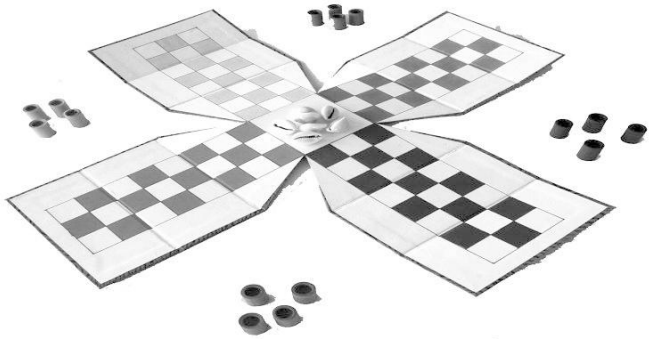

इस नाटक के सभी पात्र काल्पनिक हैं किन्तु ये घटनाएं वास्तविक हैं जिनका किसी न किसी तरह से हम सबकी ज़िन्दगी से कोई न कोई लेना देना अवश्य है

हमें अपने कार्य में सफल कैसे होना चाहिए | उसके लिए मोटे-मोटे गुण तो आपने सुने ही होंगे – साम, दाम, दंड और भेद| इन चारों को मैं ४ किरदारों के माध्यम से विस्तृत करना चाहूँगा, जिसके लिए-- विनम्र,राज,विवेक और प्रांश को आपसे अवगत करा रहा हूँ | विनम्र एक बड़ी संस्था में जूनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं | राज एक जुगाड़ू व्यवसायी हैं | विवेक ऊंचे पद पर सरकारी अफसर हैं | प्रांश दबंग एवं जोशीले व्यक्ति हैं, इनसे आगे ही मिलिए |

|| प्रथम अंक ||

एक बार की बात है| एक किसी बहुत बड़ी संस्था के जनरल मैनेजर साहब काफी नाराज़ थे| और बाकी अफसरों को 1-1 करके अपने कमरे में बुलाकर डांट लगा रहे थे|
तभी विनम्र ने अपने बॉस से पूछा --- क्या मैं साहब से अन्दर मिलकर आऊं?

बॉस-– अरे भाई! तुम्हे बात नहीं समझ आती क्या ?अन्दर माहौल इतना गरम है और तुम हो कि .....

विनम्र ---मैं अन्दर जाना चाहता हूँ | बेहद ज़रूरी काम के लिए अवकाश चाहिए है | आप अनुमति दे रहे हैं क्या ??

बॉस-– मैं तो अभी कुछ कह नहीं सकता | बाकी जैसी तुम्हारी इच्छा | जाओ अन्दर, तुम्हारी भी चड़ाई हो जाएगी|
विनम्र ने अपनी एक कविता लिखी हुई थी | उसने उस कागज़ के पीछे तुरंत लिखा "ऐतिहासिक रोबोटिक्स प्रयोगशाला के लिए आपका हार्दिक अभिनन्दन और आपको नमन! "(इस अद्भुत प्रयोगशाला को बनवाने में जनरल मैनेजर का भी काफी योगदान था), और अन्दर पहुँच गया | इसके उपरांत बिना कुछ कहे उसने उन्हें ये कागज़ दिया | इतना पढकर उन्होंने तुरंत एक बड़ी सी मुस्कान दी और फिर विनम्र ने अपनी एप्लीकेशन रख दी | उन्होंने तुरंत उसपर हस्ताक्षर किये और वह बिना कुछ कहे वापस आ गया | <u>यह था साम.</u>

|| द्वितीय अंक ||

एक बार हैदराबाद से राज व्यवसाय के सिलसिले में कुछ कीमती सामान लेकर आ रहा था | उसके पास रिज़र्वेशन नहीं था और उसे टिकट की सख्त ज़रूरत थी | प्लेटफॉर्म पर टीटी, जनता से, मक्खियों की तरह घिरा हुआ था | तभी टीटी एकदम से भड़क उठा --
"दूर हटिये सब लोग, कोई जगह नहीं है अभी मेरे पास !! "
"मेरे पास अभी कोई जगह नहीं है ...कहा ना "अभी" नहीं है | "
ऐसा बार बार सुनने पर उसने मन ही मन सोचा इसका मतलब इसके पास जगह है | उसने अपना सामान नीचे रखा और कहा "एक्सक्यूज़ मी सर !! कृपया एक नंबर दीजिये मुझे, मेरे पास गवर्नर का सिफारशी लैटर है |"
टीटी अचंभित !! इतनी भीड़ देखकर वह बोला-- "33 नंबर पे जा के बैठ जाओ" |
ट्रेन चली , टीटी आया और चिल्लाने लगा 33 नंबर,सिफारशी लैटर वाला कौन है | 33 नंबर पर मियां मज़े से सो रहे थे | टीटी और भड़क गया | उसने उसे उठाया और कहा "निकालिए अपना लैटर" |
महोदय ने बड़े प्रेमपूर्वक 1000 का नोट निकाला और कहा "यह है गवर्नर का सिफारिशी लैटर !! " बाकी तो आप समझ ही गए होंगे(सभी नोटों पर गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं) | टीटी भी खुश .
<u>यह था दाम.</u>

|| तृतीय अंक ||

अब बारी दंड की | इसे आप मेरे मित्र विवेक की ज़बानी ही सुनिए |
"यह उस समय की बात है जब मैं अविवाहित था | तब फर्स्ट क्लास के कोच (जिसमें केवल दो ही सीटें होती हैं) में मैं दिल्ली से आ रहा था | तब एक बेहद सुन्दर लड़की मेरे केबिन में आई और बोली "क्या मैं यहाँ बैठ सकती हूँ ? " मुझे क्या पता था कि मेनका के वेश में वो एक नागिन है.... पता नहीं क्यूँ पर मुझे कुछ गड़बड़ होने का आभास होने लगा | मैंने मुँह से कुछ जवाब नहीं दिया और उसे इशारों में ही कहा "बैठिये" |
उसके बाद जब ट्रेन चली तो थोड़ी ठण्ड लगनी शुरू हुई | तब उसने पूछा "क्या मैं खिड़की बंद कर दूँ ?" मैंने तब भी मुंह नहीं खोला और इशारों में ही कहा "जैसी आपकी मर्ज़ी ?" मुझे मालूम नहीं था कि क्या होने वाला है ! डर तो रहा था कि कुछ गड़बड़ होने वाली है | तभी अचानक वो लड़की खड़ी हो गयी और धमकी देते हुए बोली " 5000 रुपये निकालिए |" मैं हक्का-बक्का रह गया | मेरे मुंह से आवाज़ नहीं निकली | मैंने इशारों में ही पूछा "क्यूँ ?" उसने दोबारा धमकाया "5000 रुपये निकालिए, नहीं तो मैं शोर मचाऊंगी |" तब मैंने इशारा करते हुए उसे ये बताने की कोशिश की कि मैं तो गूंगा बहरा हूँ ...ऐ ऐ ऐ ऐ ???और कागज़ निकाला और उस पर लिखा कि लिख कर समझाए कि वो क्या कहना चाहती है | उस मूर्ख नागिन ने उस कागज़ पर सब कुछ लिख दिया | मैंने कागज़ अपनी जेब में रखा और उसे ज़ोरों से 2 थप्पड़ रसीद दिए और इसके उपरांत सबको एकत्रित किया और सच्चाई सामने लायी |
<u>यह था दंड</u>

|| चतुर्थ अंक ||

किसी रोज़ एक दिल दहला देने वाला हादसा मेरे सामने घटित हुआ | बाइक (मोटर साइकिल) पर सवार एक आदमी और उसकी पत्नी गंभीर दुर्घटना के शिकार हो गए और लहूलुहान होकर सड़क पर जा गिरे | एकाएक बहुत भीड़ उमड़ पड़ी और लोग केवल तमाशा देखने लगे | एक ओर बेशर्म जनता तो दूसरी ओर खून से लथपथ मियां -बीवी | कैसा दर्दनाक दृश्य था | तभी हेलमेट लगाये एक व्यक्ति अपनी बाइक से उतरा और जोर से चिल्लाया - "हटिये आप सब लोग ! हटिये, दूर हटिये |"

सभी लोग एकाएक पीछे हो गए | उसकी आवाज़ न जाने क्यूँ मुझे जानी पहचानी सी लग रही थी | उसने चिल्लाते हुए भीड़ में खड़े 2-3 आदमियों से कहा -"तमाशा क्या देख रहे हैं ? चलिए आइये उठाइए !" उसकी दमदार बुलंद आवाज़ सुन कर 2 आदमी हड़बड़ा कर आगे आये | उन्होंने उसके साथ मिल कर ज़ख़्मी महिला को उठाया और सामने रुकी हुई कार में बिठाया | तभी एक आदमी पीछे से चिल्लाते हुए आया - "अरे भाई क्या कर रहे हैं आप लोग | वो मेरी कार है .." तभी हेलमेट-मैन जोर से चिल्लाया - "नालायक कहीं के ! यहाँ किसी की ज़िन्दगी और मौत का सवाल है और आप को अपनी कार की पड़ी है |" वो आदमी हक्का-बक्का रह गया और मूर्ति की तरह अपनी जगह पर खड़ा रहा |

वहीं पास में खड़े CISF के जवान की ओर इशारा करते हुए हेलमेट-मैन ने कहा -" अबे साले दूर खड़े तमाशा क्या देख रहा है | उठा उस आदमी को और कार में बिठा |" वो डर के मारे बोला - "अरे साहिब मेरी नौकरी खतरे में पड़ जाएगी, यह कानूनी मामला है और पुलिस का काम है |" हेलमेट-मैन भड़क पड़ा – "पुलिस कुछ नहीं करेगी और न्यायाधीश तेरे सामने खड़ा है | उठा साले |" और उसके इशारे पर उस जवान ने उस आदमी को उठाया और दूसरे नौजवान ने गिरी पड़ी बाइक को उठा कर खड़ा किया| उसकी अद्भुत कार्यशीलता और बुलंद आवाज़ को देख कर सभी अचंभित थे | किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि यह आदमी कौन है और क्या हो रहा है | दोनों पति -पत्नी को कार में बिठाने के बाद उसने उसी कार वाले से कहा - "आप इन सब को अस्पताल ले जाईये जल्दी, मैं पीछे से आ रहा हूँ|"

बस इतना करने पर भीड़ थोड़ी छटने लगी| तभी वही नौजवान (जिसने बाइक उठाई थी) पीछे से आया और बोला - "भाईसाहब कौन हैं आप ?" हेलमेट-मैन - अरे भाई, क्या फर्क पड़ता है मैंने अपना काम कर दिया| नौजवान ने उसका हाथ पकड़ा और कहा – "मैंने पूछा कौन हैं आप ? "

हेलमेट-मैन - "अरे भाई आप कौन हैं और इस तरह मेरा हाथ क्यूँ पकड़ रहे हैं ?"

नौजवान ने अपना कार्ड जेब से निकाला और दिखाते हुए कहा -"एसीपी राठौर, क्राइम ब्रांच"!!

हेलमेट-मैन की आँखें फटी की फटी रह गयीं| उसने अपना हेलमेट उतारा और यह देख कर मैं स्तब्ध रह गया कि यह तो मेरा मित्र प्रांश था |

एसीपी - "आप कैसे कह रहे थे कि पुलिस कुछ नहीं करेगी और कौनसे न्यायाधीश हैं आप ? "

उसने एसीपी को विनम्रतापूर्वक बताया – "सर मेरा नाम प्रांश है और मैं एक साधारण-सा इंजीनियर हूँ | और मैंने सही ही तो कहा था कि पुलिस कुछ नहीं करेगी | क्यूंकि जब भगवन के अवतार सामने होते हैं तो पुलिस भी कुछ नहीं करती और सबसे बड़ा न्यायाधीश वही होता है | एसीपी ने प्रांश की पीठ थपथपाते हुए कहा - "भाई सलाम करता हूँ तुम्हें, तुमने एक एसीपी से भी बाइक उठवा दी और 15 मिनट में भीड़ को रफादफा कर 2 लोगों की जान बचा ली |"

और दोनों मुस्कुराते हुए चल दिए | मैंने अपने दोस्त को आवाज़ लगायी और उसे गले लगा लिया|

तो यह था भेद | किसी का भला करने के लिए यदि आपको झूठ भी बोलना पड़ जाये या कोई भेद छुपाना पड़ जाये तो इसमें कुछ गलत नहीं है|

कठिनाइयों की डगर पे

- पंकज कुमार

पतंग की डोर पे सवार
उड़ चला हूँ मैं|
कठिनाइयों की डगर पे
मुड़ चला हूँ मैं|

लोग मुझ पे हँस रहे,
पागल मुझे वो कह रहे
और मुझसे पूछते -
आसान राह छोड़ के,
कठिनाइयों को क्यूँ गले
लगा रहा हूँ मैं ?
मैं उन्हें अब क्या कहूँ
खुद में ही संकुचित हूँ,
जब अपने ही समझ ना सके,
गैरों के सवालों का जवाब
क्या दे सकूंगा मैं ?
कठिनाइयों की डगर पे
जो चल पड़ा हूँ मैं|

समय न मेरा मीत है,
और भाग्य भी विपरीत है;
पर, खुद पे ये विश्वास है
कि जीत मेरी निश्चित है|
और इसी विश्वास पे
ही जी रहा हूँ मैं|
कठिनाइयों की डगर पे
चल रहा हूँ मैं|
सफलता की उजली रोशनी
को ढूंढ रहा हूँ मैं|

कन्नू की "गाय" ते मम्मी की "cow"

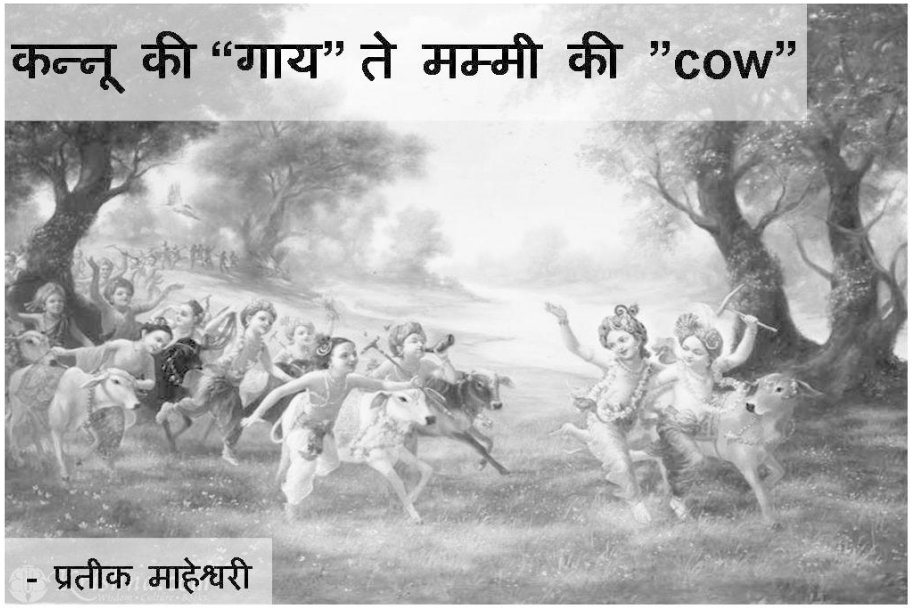

- प्रतीक माहेश्वरी

शाम का समय था और मैं और मेरे दोस्त खाना खाने पास ही में एक आंटी के पास गए हुए थे | वहाँ खाना खाते वक्त आंटी का नाती अपनी माँ के साथ वहीं आया हुआ था |

हम उससे बात करने लगे और पूछने लगे कि वो कौन से स्कूल में जाता है और क्या-क्या पढ़ता है ? उसका नाम कन्नू है और बहुत ही नटखट और होशियार है | वो खुद ही हमें बताने लगा कि कौन सा जानवर कैसी-कैसी आवाजें निकालता है | उसने हमें बन्दर, शेर और बिल्ली की आवाज़ निकाल कर दिखाई और हमें भी बड़ा अच्छा लगा | फिर हम उससे खुद जानवरों के बारे में पूछने लगे |

हमने उससे पूछा कि अच्छा बताओ "मौं-मौं (रँभाना)" कौन करता है?

तो उसने तुरंत ही कहा – "गाय"

हमने कहा बहुत बढ़िया कि इतने में ही उसकी माँ रसोईघर में से निकली और डांटते हुए कहाँ – "कन्नू कितनी बार बोला है "गाय" नहीं "काओ (cow)" कहा करो |"

उसी समय मैं समझ गया कि भारत आगे क्यों नहीं बढ़ रहा है | जहाँ माँ अपने बच्चे को बचपन से अमरीका और इंग्लैंड के लिए खाना, पीना, बोलना और रहना सिखाती है वहाँ वो बच्चा भारत के लिए क्या सोचेगा और क्या करेगा ? गलती युवाओं में नहीं पर उनको पालने वाले उनके विदेशी माता-पिता में है जो पश्चिमी संस्कृति की चकाचौंध में ही रहना पसंद करते हैं | यह तो मैं एक मध्यम-श्रेणी के परिवार का किस्सा सुना रहा हूँ तो उच्च-श्रेणी के परिवार जिनसे आज तक कोई उम्मीद ही न की गयी हो, से क्या आशा की जा सकती है?

देश वही आगे बढ़ा है जिसने अपनी भाषा को प्राथमिकता दी है | चाहे वो अमेरिका हो या फिर चीन | इस तरह की घटनाएं प्रोत्साहित करने वाली नहीं है एक उज्जवल और समृद्ध भारत की | पर कोशिश तो जारी रखनी पड़ेगी |

माँ

- सुधा सिंह

तुम ही एहसास
सबसे खास
सबसे अनमोल पूँजी
मेरे पास
तुम साकार
तुम निराकार
तुम ही जीवन का आधार
मेरी हर प्रार्थना का फल
तेरा स्नेह सरल
तुम वसुंधरा
तुम ही मेरा कल्पवृक्ष
तुम अनन्या
तुम ही मेरा सर्वस्व

बाबूजी - पूजा अगरवाल

माँ के चौड़े ललाट पर, मोटी बिंदिया बाबूजी
भैया का कैरम हैं वो, और मेरी निंदिया बाबूजी |
सब्जी, पानी, बिजली का बिल, पेड़ों में पानी देना
गर्मी के तपते मौसम में, ठंडी नदिया बाबूजी |
उनका हंसना, बतियाना, जादू की कहानी कहना
संग उनका ऐसा लगता है, पल में सदियाँ बाबूजी |
संघर्षों में हार ना मानें, सत्य को अपना साथी जानें
प्रेमचंद के गोदान की, मानों धनिया बाबूजी |
घर में सबकी ख्वाहिश, सबकी अपनी फरमाइश
सबको इच्छित फल देतें हैं, ऐसी बगिया बाबूजी |
जब भी उगा सूरज नया, जब हुई रोशन दिशाएं
माथा चूम कर हमें जगाते, स्वप्न की परियाँ बाबूजी |

शेर हो दहाड़ दो

- अभिलेख बर्तवाल

शेर हो दहाड़ दो, शत्रु वक्ष फाड़ दो,
वीर हो पछाड दो, भूमि बीच गाड़ दो |
शान पर चढ़े चलो, तेज से मढ़े चलो.
मार्ग पर बढ़े चलो, शत्रु पर चढ़े चलो |

तब तलक न शांति है, शांति बीच भ्रान्ति है,
प्राण बीच क्रांति है, क्रांति बीच कांति है |
पुण्य पर्व आज है, लाज का जहाज है,
प्राण दान काज है, निर्सहं आज राज है |
देश तुम्हारा यही, सोच लो जरा सही,
आर्य वीर हो तुम्ही, न्याय से हटो नहीं |

पुण्य – ब्रह्म नन्दनी, जो कि विश्व वन्दनी,
आज रे विडंबनी, मात्र भूमि वन्दनी |
आर्य वीर धीर दल, आज आ जरा संभल,
आज लगा ले अनल, युद्ध क्षेत्र में प्रबल |

स्वत्व आज छीन लो,शत्रु गोल बीन लो,
शक्ति हां नवीन लो, विराम भी कही न लो |
शान पर चढ़े चलो, तेज से मढ़े चलो.
मार्ग पर बढ़े चलो, शत्रु पर चढ़े चलो |

बहुत दिवस खो चुके, आज तलक सो चुके,
अब न देश सर झुके, अब न शस्त्र गति रुके |
हथकड़ी मरोड दो, शत्रु व्यूह तोड़ दो,
आर्य कीर्ति जोड़ दो, आरि प्रवाह मोड दो |
कोटि-कोटि वीर पर, बांध-बांध कर कमर,
तुम चलो जिधर, उधर काल स्वयं जाए डर |

शत्रु सामने खड़ा, रह न सकेगा अड़ा,
तुम चलो कदम बढ़ा, पैर भूमि में गड़ा |
आज शक्ति तोलती, विजय स्वयं बोलती,
नौ जवान बढ़ चलो, सिंधु से उमड़ चलो |
देश – दल प्रबल उठे, घेरता अनल उठे,
क्रांति का महल उठे, शत्रु दल दहल उठे |
शान पर चढ़े चलो, तेज से मढ़े चलो
मार्ग पर बढ़े चलो, शत्रु पर चढ़े चलो |

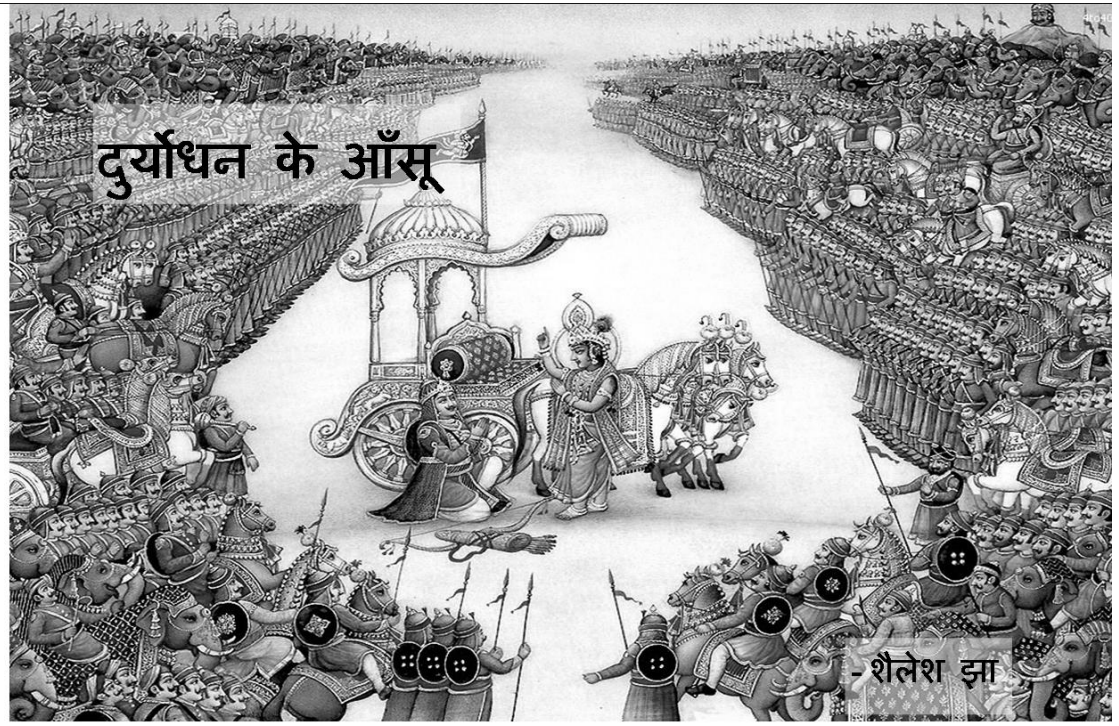

दुर्योधन के आँसू

- शैलेश झा

महाभारत के आखिरी दिन , टूटा सा , कराहता दुर्योधन सिसक रहा है | मृत्यु पास है , आज आँखों का पानी किसलिए है ?

दुनिया, वे कहते थे, एक रंगमंच है, लीला -निमेष | आज द्वापर युग के विनाशकारी युद्ध के बाद ही अहसास होता है कि रंगमंच का पर्दा खींचता हुआ नीचे आ रहा है | वो द्वेष , वो मित्रता, वो अन्याय, वो कपट, वो प्रेम - हर एक ढांचा समय की लहरें निगल रही हैं | आज जब इस नाटक पर पर्दा गिरेगा तो सबके सब साहित्य, नाटक और इतिहास के किरदार रह जायेंगे | हाँ, सबके सब , कलाकारों की सूची में एक के नीचे एक - धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर, पांचाली, भीम, दुर्योधन, श्रीकृष्ण, अर्जुन... | कुछ भी सदा के लिए नहीं रहा, न भीम से ईर्ष्या, न कर्ण से मित्रता, न द्रौपदी के प्रति वासना | वो जो सागर की तरह अथाह भावनाएं थीं, अब किताबों के चंद पन्नों में बन्ध कर रह गयीं |

दुर्योधन रोया था - अपने अपमान के लिए नहीं, न पछतावे की ग्लानि से; सिर्फ एक नाटक के अंत के लिए | कहीं एक रेगिस्तान में एक और पर्दा गिरा | आज इस अंतिम समय भी सब मीठा नहीं लग रहा, पर मुझे कड़वाहट और खट्टेपन की प्यास है | मैं भी शकुनि की तरह छल करना चाहता हूँ, भीष्म की तरह प्रतिज्ञाओं पर खरा उतरना चाहता हूँ, कर्ण और एकलव्य की भांति अन्याय की टीस सहनी है, वीरानी में बैठे किसी महापुरुष से गीता सुननी है | मैं सिसकता हूँ, इस बनावटी दुनिया की भावनाओं के लिए, आवेश के लिए - जिसका समय मखौल उड़ा रहा है |

मंज़िल रुकी है - स्निग्धा निगम

अभी रास्ता नया है और नया ये जहान् है
पर मंजिल से रुकने को मैंने कहा है |
कि लड़खड़ाती हूँ मैं, पर रुकती नहीं हूँ
टूट जाती हूँ, लेकिन मैं झुकती नहीं हूँ |
आज भीड़ में सही, कल रंगमंच पर छाऊंगी
आज तारों में हूँ, कल सूरज बन जाऊंगी |
कोई माने न मुझे, मुझे खुद पर विश्वास है
कल बात मेरी ही होगी, पूरा एहसास है |
जो आँसू हैं मेरे, मेरी प्रेरणा हैं
कि कल तो शिखर पर मुझे ही चढ़ना हैं |

वो भूली दास्ताँ - हिना जैन

बिसराना चाहूं जिन यादों को,
वो गहरे गहरे पैठ जातीं हैं
दूर भगाऊं चाहे जितना,
विरह की घड़ी पास प्रतिपल उतना आती है |
समझ नहीं पाती क्या है मेरा असल देश-काल
आँखें मेरी खुद को अक्सर,
अतीत के भंवर में पातीं हैं |
जो चक्र है मीलों बढ़ चला,
मेरी कल्पना
उसकी उल्टी चाल का अनुमान करती जाती है|
झूठी समझ लेती हूँ खुद को दृष्टा ही नहीं सृष्टा भी
सुखद भविष्य के सपनों की लड़ी,
मस्तिष्क में कौंधी चली आती है |
कुछ अनुमान,
कुछ पूर्वानुमानों से व्यक्त होने लगे हैं
उद्गार अक्सर,
क्योंकि भावनाएँ तो मेरी,
उस एक ईष्ट के अधीन आतीं हैं |

टूटे दिल की हसीन दास्ताँ

- ईशान श्रीवास्तव

हम मरते हैं कि वो सामने आ जायें
वो डरते हैं कि कहीं सामना न हो जाये |
हम पुकारते रहे और वक़्त गुज़रता गया
ज़र्रे ज़र्रे में तन्हाई भरता गया|

ना हवाएं कुछ खबर सुनाएं
फिजायें भी दर्द के ही गीत गायें|
यूँ दर्द का अफसाना बनता गया
तिनके तिनके सा मैं बिखरता गया|

निगाहें इंतज़ार में खोयी रहीं
आरजुएं भी सारी सोयी रहीं |
लम्हों से फिर भी मैं लड़ता गया
ख्वाब पे ख्वाब मैं गढ़ता गया |

लोग कहते रहे वो नहीं आयेंगे
पर मैं उसी मोड़ पे इंतजार करता गया|
वो नहीं आये और फासलों की सीढियां बन गयी
और मुस्कुरा कर मैं उन सीढ़ियों पे चढ़ता गया |

उन्हें लगा मुसाफिर हूँ, सफ़र के बाद भूल जाऊँगा
उन्हें क्या खबर कि मेरा प्यार परवान चढ़ता गया !!!

तेरा नाम

- नेहा गुप्ता,
भौतिकी विभाग

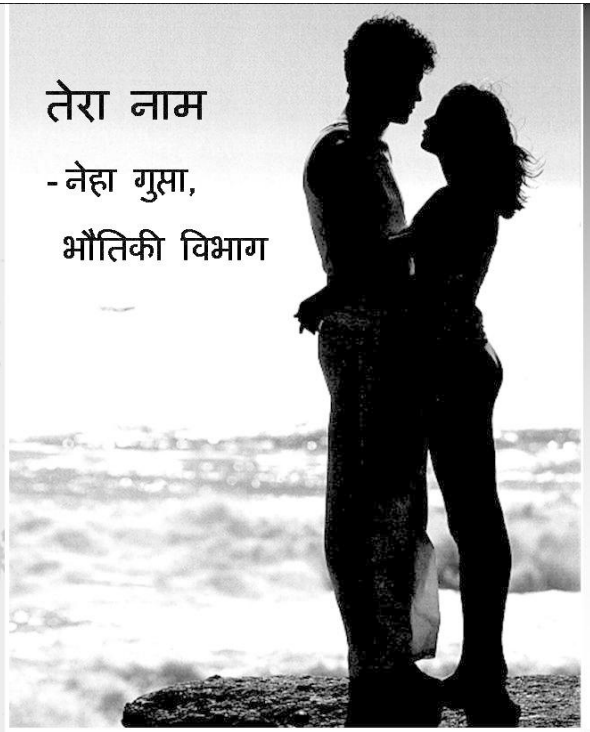

क्या करूँ कि दिल से तेरा ख्याल जाता नहीं,
पर तेरे बिना भी जिया जाता नहीं |

हर रोज तुझसे मिलने को मचल जाती हूँ मैं,
पर हर वक़्त तेरा दीदार भी किया जाता नहीं |

हर धड़कन तेरे नाम से चलती है मेरी,
पर मुझसे ये दिल भी तुझे दिया जाता नहीं |

तेरा इंतजार करती हूँ हर वक़्त मैं,
पर ये ज़हर जुदाई वाला भी पिया जाता नहीं |

तेरे नाम से ही मुस्कुरा जाती हूँ मैं,
पर हर ग़म को जिंदगी के सिया जाता नहीं |

कहना तो चाहती हूँ मैं सबसे पर,
मेरे प्रियतम तेरा नाम यूँ लिया जाता नहीं |

चले थे शौक से हम तोहफे-वफ़ा लेकर,
लोगों ने लूट लिया नाम आपका लेकर |

जो हार जाते हैं मंज़िल उन्हें नहीं मिलती,
किसी के पास ना जा हर्फे-इल्तजा लेकर |

ये आग घर को लगी है तो क्या ताज्जुब है,
गयी थी रोशनी मुझसे मेरा पता लेकर |

ये चेहरे दंग हैं कीमत नहीं यहाँ दिल की,
क्यों आप यहाँ खड़े हैं आइना लेकर |

चंद पंक्तियों से दिल बहलेगा नहीं आज,
जाइए सफ़र पे तो हमसफ़र लेकर ||

इज़हार

- ईशान श्रीवास्तव

फेसबुक-ट्विटर : आभासी दुनिया

- राहुल मेहता

इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि फेसबुक और ट्विटर जैसे प्रसारण स्थल अर्थात नेटवर्किंग साइट्स हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी हैं | आज का मनुष्य भले ही अपनी असल ज़िन्दगी में मित्रों की ओर आँख उठा कर न देखता हो, लेकिन वह इस बात पर जंग छेड़ देता है कि उसके एफ-बी खाते में मित्रों की संख्या दूसरों से अधिक है | आजकल प्रेम-प्रसंग प्यार और चाहत जैसी भावनाओ पर नहीं अपितु एफ-बी के "रिलेशनशिप स्टेटस" पर टिके हुए हैं | दोस्तों से गपशप करते हुए अगर कोई सु अथवा कुविचार मन में आ जाए तो वहीं व्यक्त करने के बजाए उसे एफ-बी स्टेटस बनाकर उस क्षण-भंगुर दुनिया की वाहवाही पाना शान समझी जाती है | ऐसे में यदि बिजली चली जाए या फिर अंतर्राष्ट्रीय संगणक तंत्र में खराबी आ जाए तो ऐसे व्यक्ति तो अपने में घुट-घुट कर ही मर जाएँ !

आजकल तो ऐसा लगने लगा है कि फोटोग्राफी की ही फेसबुक के लिए जाती है | चाहे वह विदेश भ्रमण हो या फिर अपने पालतू जानवरों के फोटो, एफ-बी को लोगों ने दिखावे का मंच बना रख छोड़ा है | एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई कि फेसबुक युवाओ में अंग्रेजी अक्षर "एफ" से आरम्भ होने वाला और "के" पर अंत होने वाला दूसरा सबसे प्रचलित शब्द है | कौन समाज सेवक कहता है कि लड़कियों के साथ भेदभाव होता है | यह साईट लड़कियों के साथ होने वाले लिंग भेद के बिंदु को सिरे से नकारती है | लड़की अगर अपना स्टेटस " :-) " भी डाल दे तो उस पर चिन्ताओं और आशाओं से भरी टिप्पणियों की बौछार हो जाती है | वहीं अगर लड़का भारत रत्न के लिए भी नामांकित हो जाए तो किसी के सर पर जूं तक नहीं रेंगती |

चलिए अब हम थोडा 'ट्वीट' करें | आपको मच्छर ने काटा, आप ट्वीट करें | आपको छींक आई, आप ट्वीट करें | आज का युवा जितना रोज़मर्रा के काम नहीं करता, उससेज्यादा तो "चहकता" है | आम आदमी ने सितारों को छूने का नया ही तरीका खोजा है | हम उनकी हर छोटी-बड़ी हरकतों से वाकिफ हैं | वे अपने सहकलाकारों पर कीचड़ उछालते हैं और हम बस कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बैठकर तमाशा देखते हैं | आज का नवयुवक बस एक "फ़ौलोवर" बन कर रह गया है जबकि भारत को युवा मार्गदर्शकों की ज़रुरत है | बेशक ट्विटर और फेसबुक के माध्यम से हम अधिक से अधिक लोगों के संपर्क में आ चुके हैं पर अंततः यह हमें ही सुनिश्चित करना होगा कि इन तकनीकों का हमें किस तरह प्रयोग करना चाहिए |

शब के चिराग

- हिना जैन

झूठी उम्मीदों पर जल रहे शब के चिरागों को बुझा जाए
कोई तो हवा आए जो टूटे ख्वाबों को उड़ा कर ले जाए |

रेत के किलों में छुपे हुए टीस के मोती बहा जाए
कोई तो लहर आए जो गर्जन से आत्मन के सीपों का शोर दबा जाए |

बुझे मन के आँसुओं से भीगे कोयले जला जाए
कोई तो चिंगारी आए जो यादों को राख बना जाए |

चुभी हुई फाँस से बनी तारों की चादर हटा जाए
कोई तो सुबह आए जो निराशा के तम से जगा जाए |

बिखरे वजूद की कतरनों को एक सार बना जाए
कोई तो खुदा आए जो मुझ ही से मुझ को बचा जाए |

विरह–वेदना

- सुधा सिंह

काँव काँव कर रहा
द्वार पे बैठा है कागा
पर न आये तुम पिया
ना कोई संदेशा आया....

द्वार पर मैं ताकती
खिड़कियों से मैं झांकती
व्याकुल हृदय तीनों पहर
रात भर मैं जागती
राही कई आये गए
तू कहीं नज़र न आया
ना कोई संदेशा आया.....

विरह में दिन सारे बीते
नयन अश्रु से थे सींचे
फिर भी जाने कैसे
पुष्प प्रेम का मुरझाया
ना कोई संदेशा आया

इक दरस को तेरी प्रियतम
तरस गए नयन मेरे
आ भी जा अब पूरे कर
अधूरे सब वादे तेरे
खत कई लिखे तुझे
ना जवाब कोई आया
ना कोई संदेशा आया

व्यापार बढ़ रहा है - प्रतीक माहेश्वरी

आज वैलेनटाइन्स डे है | कुछ लोग एक दूसरे को बधाई दे रहे हैं कुछ इस तरह - स्वतंत्रता दिवस मुबारक हो अर्थात अकेले हो, खुश हो, आबाद रहो...
भैया ये सब तो दुःख छुपाने के टोटके हैं | अन्दर ही अन्दर कुढ़ते होंगे | गुदगुदी तो होती ही होगी कि काश वो मेरे साथ होती या होता | पर जनाब छुपाने का पुराना तरीका.. सिंगल एंड हैप्पी !
वैसे मेरा मानना है कि ये सब व्यापार बढाने का तरीका है | अरे बाबू, ऐसा थोड़े ही ना है कि आप किसी से साल में एक ही दिन प्यार करते हो और बाकी 364 दिन किसी दूसरे की तलाश में जुटे रहते हो ? फिर यही एक दिन ? सब व्यापार बढाने के तरीके हैं और सफल भी हैं !!
लोगों को दिल का भुलावा देकर बड़े ही आराम से उल्लू सीधा किया जाता है और लोग करवाते भी हैं !
खैर जो बन रहे हैं.. बनिए.. और जो नहीं बन रहे हैं वो ही सच्चे "बनिये" हैं !!

पर फिर भी सोच रहा था कि आजकल सिंगल एंड हैप्पी का चलन क्यों चला है ?
मैं पुरुष सोच के हिसाब से यही कहूँगा :
लड़की दोस्त(गर्लफ्रेंड) होती है तो खर्चे बढ जाते हैं | फ़ोन भी आप ही करते हैं, मिलने भी आप ही जाते हैं, मूवी की टिकट भी आप ही को खरीदीनी पड़ती है, खाने का बिल भी आप ही को देना पड़ता है, सौ नखरे भी आप ही को सहने पड़ते हैं और कभी धरे गए तो पिटाई भी आप ही की होती है.. उधर उसका भाई और इधर आपके पिताजी !
तो बात यह बनती है कि किसी लड़की के प्रवेश करने से अगर आपकी ज़िन्दगी इतनी नाकारा हो जाती है तो बेहतर है कि प्रवेश द्वार बंद ही रखी जाए | इसीलिए लोग कहते हैं सिंगल एंड हैप्पी | मैं भी (फिलहाल) इस बात को मानता हूँ |
तो अगर प्यार करना है तो यही गाना गाते हुए करिए - "जब प्यार किया तो डरना क्या" और मार खाते वक़्त भुनभुनाईयेगा - "मार डाला" ...
और अगर नहीं करना है तो ये गाना गाइए - "है अपना दिल तो आवारा"
और जो लोग आज़ादी दिवस मानना चाहते हैं उनसे कहूँगा कि देश को आज़ाद करिए, आप खुद आज़ाद हो जाएँगे | हमारे महानगरों में बम धमाके हुए हैं, थोड़ा प्यार उधर भी बाँट दीजियेगा | पैसों से बाहर के घाव भरते हैं, अन्दर के नहीं | प्यार करना है तो हर इंसान से करो, एक अलग अनुभूति होगी |
हो सकता है आतंकवाद भी ख़तम हो |
बाकी तो व्यापार बढ़ ही रहा है और लोग बन ही रहे हैं !!

सूरज छुप रहा था उस दिन समुद्र के पीछे
आसमां मिल रहा था धरती को छूके
पहली बार लगा कि जैसे
लहरें छुपा रही हैं अपने आँसू पानी में खोके

याद आ रही थी क्यों सारी बातें जैसे
सपनों को फिर से जीया हो अँधेरे में खोके
क्यों उस दिन रेत भी पानी सी लगी
क्यों हमें आँहे भी खुद की सानी सी लगी

उस दिन अजब सी उम्मीद जागी थी सोके
लगा जैसे अँधेरा खड़ा हो रोशनी को रोके
लगा जैसे फूल भी खिल रहे हो अपनी सीमाएँ तोड़के
घूम रही हो जैसे हवाएँ तूफ़ान का रास्ता रोके

कांटे भी क्यों लग रहे थे उस दिन इतने प्यारे
सावन की बूंदे भी क्यों लग रही थी जैसे
हटा हो अभी आसमां रो कर
फिर भी क्यों लोग दिलासा दे रहे थे
मुझको ऐसे रोकर

तब समझ में आया कि
वो तो मेरी अर्थी पर बहा रहे थे आँसू
और मैं, मैं आजाद थी दुनिया के हर धोखे से |

हमारे साहब

- रुचिका शर्मा, भाषा विभाग, बिट्स पिलानी

ऑफिस से आते ही वो तगमगा उठा | अभी मेज़ तक साफ़ नहीं हुई | सब के सब कामचोर भरे पड़े हैं | अपनी आवाज़ को संयत करते हुए उसने अपने बनावटी एक्सेंट में चपरासी को आवाज़ दी, --रज़ेश, रज़ेश |

राजेश अपने ही नाम के अनोखे उच्चारण पर आनंदित होता हुआ साहब के दरवाज़े की और लपका | अंदर के तापमान को भांपते उसे देर न लगी | रोज की तरह आज भी साहब नौ के बजाय साढे दस बजे तक आएंगे, यह सोचकर उसने ऑफिस साफ़ नहीं किया था | पर उसे क्या पता था कि सूरज आज पूरब की जगह पश्चिम से उगेगा और सबसे पहले उसी पर अपनी आग बरसायेगा | वह तुरंत कपड़ा लिए मेज़ की तरफ लपका | अपने दस साल के कैरियर में आज पहली बार उसके हाथ इतनी सफाई से काम कर रहे थे | जल्दी-जल्दी मेज़ पोंछते हुए वह मन ही मन विभाग की नई पॉलिसी को भी कोसता जा रहा था | आज तक किसी भी अफसर की उसपर रौब झाड़ने की हिम्मत तक न हुई पर कमबख्त अबसे अफसरों की रिपोर्ट पर ही पदोन्नति व तनख्वाह में इन्क्रीमेंट लगेगा | अगर उसे नौकरी की ज़रूरत न होती तो वो कब का इस अफसर की ऐसी की तैसी कर चुका होता | "पर कोई बात नहीं, साहब हमसे ही तो फ़ाइल आगे करवाएंगे", यह सोचकर वह अपने खिसियाए चेहरे पर सीधेपन के भाव भरने लगा |

"बस, बस आगे से ध्यान रखना", कहकर साहब ने अपनी फ़ाइल का पुलिंदा आगे खिसकाया | उस काम के ढेर को देखकर सुबह की सैर व आते समय साथियों के साथ मारे गए गप्पों का स्वाद किरकिरा हो गया | इनमें से कई काम आज ही निबटाने होंगे | अचानक ही उसका ध्यान अप्रेज़ल रिपोर्ट पर गया | अब उसे पता था क्या ज्यादा अहम है | उसने फिर रज़ेश को आवाज़ लगाई व मि. वर्मा को बुलावा भेजा | नई-नई नौकरी का जोश व डर लिए जैसे ही मि. वर्मा कमरे में दाखिल हुए साहब ने उन्हें दस फाइलों का काम देते हुए कहा कि, "आई नो, यू आर वेरी एफिशिएंट बट, आपको ऑफिस के तौर तरीकों को भी समझना होगा, वी हैव वेरी हाई होप्स फ्रॉम यू | यह काम कल तक कर के लाइए |"

अब बारी मि.शुक्ला की थी | लेकिन राजेश ने कहा कि मि.शुक्ला की माँ की तबियत खराब है, आज नहीं आएँगे | बस क्या था, इतना सुनते ही पूरब में उगे उस सूरज ने आग उगलनी शुरू कर दी | "जब देखो तभी जनाब नदारद हैं | अभी तो शादी भी नहीं हुई और ये हाल हैं | हमें देखो घर की ज़िम्मेदारी और ऑफिस की भी | जवान लोगों की अभी से ये हालत है | क्या हमने काम नहीं किया ? कल बेटे का क्रिकेट मैच था, फिर भी शाम को सात बजे तक काम करते रहे | शाम को बेटी को ट्यूशन छोड़ने जाना है, क्योंकि मिसेज की किटी पार्टी है| सभी जिम्मेदारियां संभाल रहे हैं | हाँ, अगर बीवी बीमार है, बच्चे का कोई काम है तो समझ में आता है | भई, सभी बाल-बच्चे वाले हैं, हम नहीं समझेंगे तो कौन समझेगा ? पर यह क्या बात हुई, आए दिन छुट्टी वो भी बिना परिवार की ज़िम्मेदारी के |"

साहब ने बाकी बचे कामों को भी मि.शुक्ला के भरोसे छोड़ा व सबसे अहम काम में जुट गए | "आज जल्दी आ ही गए है तो ये काम भी कर देते हैं", ऐसा सोच साहब के हाथ सभी सहभागियों की परफॉर्मेंस रिपोर्ट बनाने में जुट गए | वहीं दूसरी और मि.वर्मा रात दस बजे तक ऑफिस में काम करते रहे और मि. शुक्ला अपनी बीमार माँ की देखभाल |

ज्योति

- लोकेश राज

यह एक नया व अजीब अहसाह था, संपूर्ण शांति का |

अपने जीवनकाल में हर मनुष्य कभी न कभी मृत्यु के बारे में कल्पना अवश्य करता है | मृत्यु का अहसास कैसा होगा, जीवन के आगे की दुनिया क्या है ? परन्तु जीवन के दौरान मृत्यु के बारे में उतनी ही जानकारी होती है, जितनी कि पराग्रहियों के धरती पर आक्रमण के बारे में |

उसे बिलकुल चेतनाहीन होने सा अहसास हुआ(यदि उसे अहसास कह सकते थे) | उसके चारो ओर ऐसी शांति, सन्नाटा, ठहराव था जिसकी कामना उसने जीवन में कई बार की थी पर उसकी प्राप्ति उसे अभी हो रही थी, जीवन के बाद |

वह मृत हो चुका था |

कुछ देर तक वही सन्नाटा कायम रहा | सिर्फ उस ठहराव का बोध था | उसका संपूर्ण अस्तित्व या अस्तित्व का बोध, उसके जीवनकाल का एक प्रतिबिम्ब मात्र था जिसे वह धीरे-धीरे अलग कर रहा था |

वह किसी दूसरी जगह था, संभवतः दूसरी दुनिया में | उसके चहुंओर एक खालीपन था, असीमित शून्य था | अपने सामने उसे मंत्रमुग्ध करने वाली सुनहरी रोशनी का एहसास हुआ एवं दूसरी ओर भयावह काले अँधेरे का बोध हुआ |

स्वर्ग एवं नर्क जैसे कि उसे हमेशा से ही पता था | वह समझ गया | अतएव वह यह भी जनता था कि यह फैसला उसका स्वयं का नहीं होगा | फिर भी, अनिश्चित भाव से वह रोशनी की ओर बढ़ा |

"क्या यह राह सही है ?"

उसे लगा मानो यह आवाज़ उसी के अंतर से आ रही हो, हालाँकि उसे पता था कि वह उस अंधकार के पीछे से आ रही थी |

"मैं हमेशा एक सदाचारी पुरुष रहा हूँ", उसने सोचा |

"अवश्य | सत्य है", रोशनी की ओर से आती ध्वनि को उसने महसूस किया |

"यहाँ पर कुछ भी छिपा नहीं है | जीवनोपरांत कोई रहस्य नहीं रहता | तुम्हारी आत्मा यहाँ पर पारदर्शी है", अंधकार ने कहा |

"स्वर्ग का प्रकाश सिर्फ पवित्र ह्रदय वालों के लिए है जिनका ह्रदय दर्पण की भांति है", प्रकाश ने कहा |

"मैंने कभी किसी भी जीव को दर्द नहीं पहुँचाया, अपने संज्ञान में तो नहीं |"

"पर तुम्हारे ह्रदय में बुराई का वास था", अन्धकार ने कहा |

"वह कभी भी शीशे के जैसा स्वच्छ नहीं था", प्रकाश ने जोड़ा |

" "क्या तुमने कभी अपने प्रियजनों की सफलता से ईर्ष्या महसूस नहीं की ?"

वह ना नहीं कह सकता था |

"कभी-कभी या कई बार" |

"क्या कभी तुमने क्रोध में अपने मित्रों का अहित नहीं चाहा ?"

"यहाँ कुछ भी नहीं छिपा | सब सत्य है |"

"क्या कभी तुमने प्रतिशोध से ग्रस्त होकर दूसरों को कष्ट पहुँचाने की इच्छा नहीं की ?"

"....."

"अतएव जब तुम्हारे ह्रदय में इतनी कुत्सित भावनाओं का वास था, तो तुम्हें स्वर्ग में स्थान कैसे मिल सकता है ?"

वह नि:शब्द था | जैसे वह धीरे-धीरे अन्धकार की ओर बढ़ा, एक दिव्य व शक्तिशाली ध्वनि जो कि चहुंदिशाओं में गूंजती प्रतीत हो रही थी, ने कहा,"ठहरो वत्स, वह तुम्हारी जगह नहीं है, तुम्हारे लिए स्वर्ग के ऐश्वर्य हैं |"

"पर मेरा ह्रदय पवित्र नहीं, मलिन था |"

"प्रकाश की ज्योति हमेशा से ही ऊपर उठती है | अँधेरा नीचे रह जाता है, पर ज्योति ऊपर उठकर सिर्फ प्रकाश ही होती है, अंधकार नहीं |

"तुम सभी मनुष्यों में कुछ अंधकार है, बुराई है | पाप किसी को भी बिना स्पर्श किये नहीं रहता | पर महान वही है जो उस अँधेरे से ऊपर उठकर सही विकल्प चुनता है, सही निर्णय लेता है |"

"यद्यपि ह्रदय में बुराई हो, तथापि महत्वपूर्ण यह है कि मनुष्य उससे ऊपर उठकर उस पाप के पुंज को बुझाकर सही राह पर चले, सत्य की राह पर चले | तुम क्या हो, इससे महत्वपूर्ण यह है कि तुम क्या होना चाहते हो | गुण-अवगुण से अधिक महत्त्व रखते हैं तुम्हारे निर्णय | अच्छा बनना है या बुरा, यह स्वयं का ही निर्णय होता है |"

"हाँ, तमाम बुरी लालसाओं व प्रलोभनों के बावजूद मैंने हमेशा उन्हें दबाकर सही का ही चुनाव किया है |"

"मुझसे कुछ नहीं छिपा", ध्वनि गूंजी |

और वह आगे बढ़कर प्रकाश का एक हिस्सा बन गया |

सफ़र की चाह में
- स्निग्धा निगम

सोचा नहीं है जाना कहाँ है
कदम ले जाएँ जहाँ, मंजिल वहाँ है |

मैं राही हूँ, मंजिल से है वास्ता न कोई
भटक जाऊँ है रास्ता न कोई |

न लक्ष्य न साथी न ठिकाना है मेरा
हर मील का पत्थर आशियाना है मेरा |

न ढूँढता हूँ सच न धन मुझे पाना है
इस सफ़र का हर पल मेरा खजाना है |

वक़्त
- सौरभ करमचंदानी

वक़्त आज हाथों से यूँ फिसला,
जैसे मुट्ठी से रेत |
अतुल्य है वक़्त की माया,
जो समझ गया, वो जीत गया,
जो ना समझा वो है ढ़ेर |
वक़्त जो दे साथ, तो हो जाए अद्वितीय तू,
जो ना दे साथ, तो राजा से रंक बन जाए तू |
थाम के चले जो हाथ वक़्त का ,
पहुंचेगा ऊंचाइयों पर वो |
जो फिसल गया वो हाथ से ,
चुभेगा बन के एक नासूर,
ख़ाक ना होने देना इसको,
वरना मिट जाएगा दस्तूर ||

अधूरा रक्षाबंधन

- शशिन यादव

जब भी रोता था बचपन में,
चुपके से वो आती थी |
एक चॉकलेट देकर मुझको,
प्यार से वो चुप कर जाती थी |
जब भी गलती करता था मैं,
डांट के मुझे समझाती थी |
पर उस डांट में भी मुझको,
प्यारा सा एहसास दे जाती थी |
मुझको क्या चाहिए,
यह पहले ही वो समझ जाती |
मेरे माँगने से पहले ही वो,
मुझको सब दे जाती |

साल में एक दिन बस ऐसा आता है,
जब उनको मुझसे उपहार माँगने में
बड़ा मजा आता है |
यह किस्सा है मेरी दीदी का,
और वो दिन रक्षाबंधन कहलाता है |
इस बार नहीं हूँ मैं उनके पास,
पर लगा रखी है मिलने की आस |
मुश्किल है कि पूरी होगी मेरी यह आस,
इसलिए यह कविता लिखी है खास |
कहना तो बहुत कुछ चाहता हूँ तुमसे,
पर इतना ही कहूँगा आज,
भले ही मिल जाए तुम्हें सारी दुनिया का खजाना,
मगर अपने छोटे भाई को कभी भूल ना जाना |

खूनी लाल

रोहित पमनानी (आभार – स्वप्निल गोयल)

अमृत दिल्ली के सुप्रसिद्ध फोटोंग्राफर्स में से एक था | अपने कार्य के सिलिसिले में एक बार उसका शिमला आना हुआ जहाँ उसके ठहरने की व्यवस्था शहर के सबसे शानदार होटल 'दि पेरेडाइज' में की गयी थी |

पहला दिन.. शाम को थके हारे कमरे में प्रवेश करते ही अमृत ने सबसे पहले अपना सामान टेबल पर फैंका व आराम से लेट गया | मगर कुछ देर के बाद ही उसे कुछ और भी एहसास हुआ | यह एहसास था किसी बहुत ही मधुर संगीत का | वह धुन ऐसी - जैसे कोई अपना दर्द बयान कर रहा हो | बाहर निकल कर देखा तो उसे एहसास हुआ कि वह आवाज़ उस पंक्ति के अंतिम कमरे यानि कि कमरा नंबर 412 से ही आ रही थी | अमृत की उत्सुकता काफी बढ़ गयी | और अधिक जानने के लिए उसने की-होल से कमरे के भीतर देखा, तो उसे एक लड़की दिखाई दी | खूबसूरत सफ़ेद पोशाक पहने वह पियानो बजा रही थी | अमृत ने उसका चेहरा देखने की कोशिश की, मगर देख ना सका, वह दरवाज़े के दूसरी तरफ बैठी थी | कुछ देर उस धुन को सुनने के बाद वह अपने कमरे में वापस आ गया |

दूसरा दिन.. दिन भर की भाग-दौड़ के बाद अमृत शाम को कमरे में पहुँचा | पर आज फिर से उसे ठीक उसी समय उसी संगीतमय धुन की खूबसूरती का एहसास हुआ | उत्सुकतावश अमृत ने उस कमरे के की-होल से फिर भीतर देखने की कोशिश की | मगर उसी जगह, उसी सफ़ेद पोशाक में, उसी धुन को वह लड़की बजा रही थी | इस बार भी और कुछ न जानकर वह अपने कमरे में वापस आ गया |

सातवाँ दिन.. आखिर अमृत का फोटोंग्राफी कार्य बहुत ही अच्छी तरह संपन्न हुआ और उस रात वह वापस दिल्ली के लिए निकलने वाला था | अब तक सभी दिन ठीक उसी समय वह धुन बजती थी, मगर आज काफी देर हो जाने पर भी उसे कोई धुन सुनाई नहीं दी | "अजीब है.." यह सोचते हुए उसकी उत्सुकता अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी और उसने कमरा 412 में की-होल से भीतर देखा |

मगर ये क्या !! उसे कुछ दिखाई दिया तो था 'लाल', सिर्फ 'खूनी लाल' रंग !

आश्चर्य, दुविधा और उत्सुकता के मारे वह रिसेप्शन काउंटर पर पहुँचा और रिसेप्शनिस्ट से पूछा, "मैम, क्या आप मुझे कमरा नंबर 412 के बारे में बता सकती हैं ?" थोड़ी हैरान और परेशान सी रिसेप्शनिस्ट ने बताया, "सर, उस कमरे में एक बहुत ही खूबसूरत राजकुमारी रहा करती थी | वह एक लड़के के साथ भाग चुकी थी, पर अपने प्रेमी से विच्छेद होने के बाद दुःख से भरी उस राजकुमारी ने इस होटल में कमरा नंबर 412 लिया था | मगर 2 साल पहले अपनी ज़िंदगी से तंग आकर उसने आत्महत्या कर ली थी |"

अब तो अमृत की उत्सुकता और भी बढ़ गयी | उसने पूछा "मैम, क्या उस राजकुमारी के बारे में आप और कुछ बता सकती हैं ?" रिसेप्शनिस्ट ने बताया, "सर, वह अपनी पसंदीदा सफ़ेद पोशाक में पियानो बजाया करती थी | मगर एक बात और भी बहुत अजीब है जिस पर किसी को भी विश्वास नहीं होता |"

अमृत – "वह क्या?"

रिसेप्शनिस्ट – "सर, उसकी आँखें लाल थीं..... 'खूनी लाल' |"

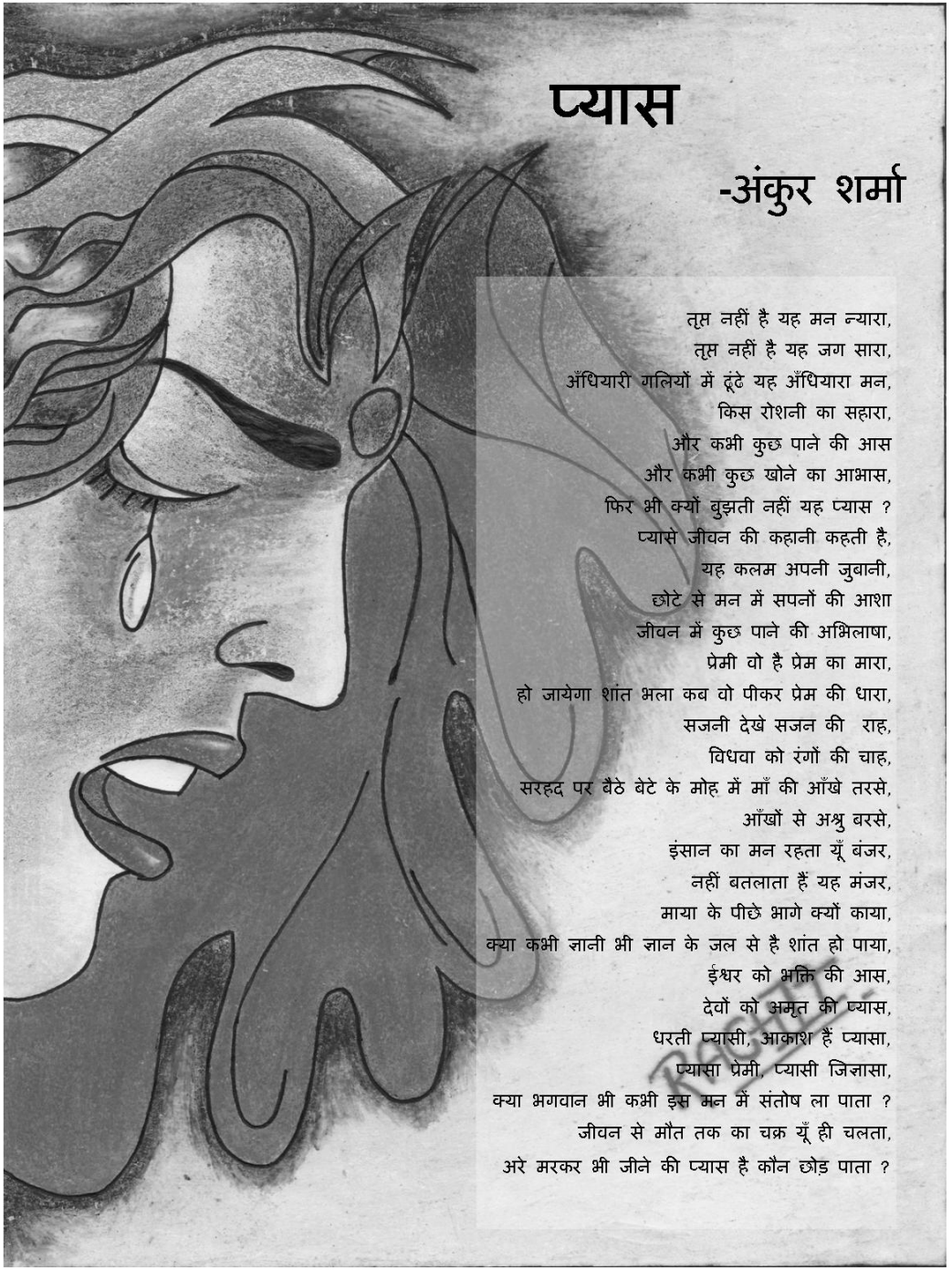

प्यास

-अंकुर शर्मा

तृप्त नहीं है यह मन न्यारा,
तृप्त नहीं है यह जग सारा,
अँधियारी गलियों में ढूंढे यह अँधियारा मन,
किस रोशनी का सहारा,
और कभी कुछ पाने की आस
और कभी कुछ खोने का आभास,
फिर भी क्यों बुझती नहीं यह प्यास ?
प्यासे जीवन की कहानी कहती है,
यह कलम अपनी जुबानी,
छोटे से मन में सपनों की आशा
जीवन में कुछ पाने की अभिलाषा,
प्रेमी वो है प्रेम का मारा,
हो जायेगा शांत भला कब वो पीकर प्रेम की धारा,
सजनी देखे सजन की राह,
विधवा को रंगों की चाह,
सरहद पर बैठे बेटे के मोह में माँ की आँखे तरसे,
आँखों से अश्रु बरसे,
इंसान का मन रहता यूँ बंजर,
नहीं बतलाता हैं यह मंजर,
माया के पीछे भागे क्यों काया,
क्या कभी ज्ञानी भी ज्ञान के जल से है शांत हो पाया,
ईश्वर को भक्ति की आस,
देवों को अमृत की प्यास,
धरती प्यासी, आकाश हैं प्यासा,
प्यासा प्रेमी, प्यासी जिज्ञासा,
क्या भगवान भी कभी इस मन में संतोष ला पाता ?
जीवन से मौत तक का चक्र यूँ ही चलता,
अरे मरकर भी जीने की प्यास है कौन छोड़ पाता ?

बंजारी तमन्नाएँ

- सिद्धांत जैन

मैं तो एक राही हूँ . . .
जीवन के सफर पर निकला हूँ . . .

यादों की तलछट में खोजता आरज़ुओं के निशाँ . . .
वादों की उल्फत में हैं अरमानों के श्मशाँ . . .
जीवन की चाल से कदमताल
न मिला सकीं उन मकबरों की अज़ियाँ . . .
फिर भी अर्जियों के निशाँ
ढूँढता चला हूँ मंज़िलों के दरमियाँ . . .

इक मैं ही हमसफ़र मेरा
चलता चला मगर . . .
हर दर पर्वत खड़े करती रही ये डगर . . .
सिरहनों के साये में
डोलती रही ये कश्ती पग प्रहर . . .
थामे रहा पर थमने न दिया
ये रिसता जिगर . . .

पर अब ग़म है न आँसू . . .
और न ही खुशियाँ . . .
कोई चाह है न कोई आस . . .
इक सफर करना है . . .
मुझे चलना है |

मैं आनंद ढूँढता रहा

- नीतिश पाठक

"मैं आनंद ढूँढता रहा..... –
खेत-खलियान , घर-आँगन, गली-नुक्कड़
कहाँ-कहाँ जाने झूमता रहा |
हँस-हँस बोल, बोल-बोल हँसकर,
मन फिर भी घूमता रहा |
कुछ तो कोरा था जीवन में ,
मन की सूनी इस बस्ती में ,
मैं वो आनंद ढूँढता रहा.....

मनुष्य ने अपार प्रगति कर ली है | यह विज्ञान जिसके गुण हर कोई गाता रहता है, अत्यंत प्रभावी साबित हो रहा है | "आज का मानव, मानव नहीं रहा|" उसने उस ईश्वर के समकक्ष आने में कोई कसर नहीं छोड़ी है | पर वह अनजान है उस आनंद से, न जाने क्यों ?

"यह क्या अनाप शनाप बक रहे हो, साहब ?", एक आवाज़ बार-बार पूछ रही है | समझाना तनिक कठिन है और साबित करना तो लगभग नामुमकिन ही है किन्तु एक बार प्रयास कर लेते हैं चलिए |

"जवाब बड़ा सीधा सा है| आज का मानव, मानव नहीं रहा |"

"अरे, इतने असमंजस में क्यों पड़ गए | जैसे हमने सारी मानव सभ्यता से उसके प्राण ही मांग लिए हों |" सही ही तो कह रहे हैं | इस प्रतिस्पर्धा ने हमें इतना क्षीण, अंतर्मुखी और संकीर्ण बना दिया है कि मेरा पड़ोसी भी एक दिन आ पहुंचा और कहने लगा | "अजी, साहब आपको कभी देखा नहीं यहाँ पर | नए आये हो क्या ?"

अब उसे क्या-क्या बताऊँ | "जी हाँ, 20 साल पहले जब यहाँ आया था तो नया ही था |"

एक वो समय था जब मानव की प्रवृत्ति अपने मानस को तृप्त करने में थी | आज पूछते हैं – "भाई यह मानस है क्या ?" एक साहब थोड़े गंभीर स्वर में कहते हैं – "अरे जी, मानस रियल एस्टेट वाले, पैसे खिलाये बिना थोड़े ही मानेंगे |" और फिर हाँथों से कुछ करतब करते हैं और बाकी लोग मुस्करा देते हैं | समय कुछ ऐसा आ गया है कि मानस को तृप्त करने वाला वह गुलाब भरी जवानी में सिसकियाँ ले रहा है | आखिर उस सुगन्ध से अनजान मानव ने आज शारीरिक आवश्यकताओं को तरजीह देना जो आरम्भ कर दिया है | यह प्रकृति तो इतनी गैर हो चुकी है कि यह अब एक स्वप्न की तरह लगता है कि रात का काला धुप्प पर्दा दूर होगा, और मनुष्य उछ्वासित होगा सिर्फ इस बात से नहीं कि अब उसे पेट-पूजा की समिधा जुटाने में सहूलियत होगी बल्कि इस बात से भी कि सूर्य की प्रस्फुटित होने वाली सुनहली किरणों

से उसके मन-मोर नाच उठेंगे | आज वह मनुष्य उस उगते सूर्य को देख भी नहीं पता | बेचारा शैया छोड़ता है और सूर्य देवता सिर के ऊपर से झांक रहे होते हैं | दूब पर पड़े वह ओस कण जो उसे आनंद विभोर कर देते थे, उसकी प्रतीक्षा में न जाने कहाँ वाष्पित हो जाते हैं |

अब आइए तनिक मानव और पशु में भिन्नता समझें | मनुष्य के शरीर में पेट का स्थान नीचे आता है और मानस का ऊपर | पशुओं के समान उसके पेट और मानस समानान्तर नहीं हैं | यह उसे पशुओं से अलग करता है | अब इस क्रम को पलटने में तो कोई बुद्धिमत्ता नहीं है ना, पर समझाएं कैसे ? मनुष्य संतुलन तोड़ता जा रहा है | पूर्व में वह गाते हुए कमाता था और कमाते हुए गाता था, और अब कमाता है, कमाता है और कमाता ही रह जाता है | गाता भी है तो वही पड़ोसी फिर आ धमकते हैं और कहते हैं – "भाईसाहब, कोई मर गया क्या ? अभी रोने की आवाज़ आई|"

इन सुविधाओं के प्रलोभन ने उसे अंधा कर दिया है | क्या सुविधाओं की प्रचुरता उसे वास्तव में खुशी दे सकती है? अब उत्तर तो आप जान ही गए होंगे |

अब चलिए, ज़रा इस बात पर विचार करते हैं कि क्या एक सुदृढ़ समाज मानव के आनंद का स्रोत हो सकता है ? जी क्यों नहीं | पर यह समाज बनाए कौन ? अब सब तलाश करने लगते हैं उस मसीहा की | कब वह कृष्ण आएँगे और द्रौपदी को चीर हरण से बचाएंगे ? कब इस राक्षसता का नाश करने के लिए राम-लक्ष्मण पैदा होंगे ?

पर इस कलयुग में वे भी "बिज़ी" हैं जी | अपौइंटमेंट भी नहीं मिलने वाली यहाँ |

"आजकल आनंद बहुत महंगा है साहब|"

"समझ आ जाये तो ठीक है नहीं तो वैसे भी वो आपके बस के बाहर है | ज्यादा मत सोचिये |"

अब सोचते हैं .....

आनंद आखिर कैसा होगा | शायद इस हवा में तब एक नयी ऊर्जा और प्रेरणा होगी | मनुष्य खुद तो उड़ेगा ही, अपने साथी को भी पीछे नहीं रहने देगा | शिकायत का कोई स्थान नहीं होगा | विश्लेषण की शक्ति जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी हमें दुर्बल नहीं होने देगी | शिष्टाचार और अनुशासन हमें वास्तव में मानव बना देंगे और सूर्य का प्रकाश इस संसार को जगमग करते हुए आनंद विभोर कर देगा | और तब मानव प्रतिस्पर्धा में भी सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत करेगा ..... शायद कुछ ऐसा ही |

कहाँ, कैसी, क्यों

नेहा गुप्ता, भौतिकी विभाग

ज़िन्दगी, कहाँ है ज़िन्दगी,
अपने दुखों के गर्भ में,
या दूसरों के सुख के सन्दर्भ में,
नहीं, कहीं नहीं सिर्फ आपकी दृष्टि में,
हर कहीं हैं ज़िन्दगी ईश्वर की सृष्टि में |

ज़िन्दगी, कैसी है ज़िन्दगी,
फूलों सी महकती हुई,
या आग सी दहकती हुई,
नहीं, ऐसी नहीं, सिर्फ प्यारी सी आस हैं,
पर ये ज़िन्दगी हर किसी के लिए खास है |

ज़िन्दगी, क्यों है ज़िन्दगी,
अथाह दुनिया में खोने के लिए,
या अपने छोटे से कोने के लिए,
नहीं, यूँ नहीं, जिन्दादिली से जीने को,
ज़िन्दगी है सभी के गमो को सीने को |

ज़िन्दगी, अजीब हैं ज़िन्दगी,

बेशकीमती है ज़िन्दगी

- सौरभ करमचंदानी

आँसुओं में भी ख़ुशी तलाश कीजिए ,
बेशकीमती है ज़िन्दगी, यूँ ज़ाया ना कीजिए |
माना अभी अँधेरा है ,
सुबह का इंतज़ार ज़रा कीजिए |
मिलती है यह ज़िन्दगी एक बार,
ग़म से यूँ मोहब्बत न कीजिए |
न मिल सकी कोई मंजिल तुझे ,
तो खुद से पर्दा न कीजिए |
ख़ुदा पर भरोसा करके तो देखिए ,
मुश्किलें होंगी आसान, कभी राह पर चल के तो देखिये |
काँटों पर चल के ज़रा सीख़ तो लीजिए ,